सांध्य दैनिक 4PM

एक टूटा हुआ माइक्रोफोन सन्देश प्रसारित नहीं कर सकता है, इसी तरह एक बेचैन मन भगवान की प्रार्थना नहीं कर सकता।

–परमहंस योगानंद

मूल्य ₹ 3/-

जिद...सच की

www.4pm.co.in | www.facebook.com/4pmnewsnetwork | @Editor_SanjayS | YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 12 ● अंकः 75 पृष्ठः 8 ● लखनऊ, सोमवार 20 अप्रैल, 2026

केकेआर ने आरआर को हराकर चखा... 7 | संसद में प्रियंका की दहाड़ से... 3 | बीजेपी ने नैतिक रूप से सरकार... 2

सीजफायर के झूले से समुद्री संग्राम तक

ईरान की जवाबी कार्रवाई उड़ा दिया अमेरिकी युद्धपोत

ईरान-अमेरिका टकराव फेज-2 में दाखिल

» आसमान से समंदर तक ड्रोन, डेस्ट्रॉयर और दावों की जंग

» कूटनीति ठहरी, संदेश तेज खटाई में पड़ती शांति वार्ता

» तेल व्यापार और समुद्री रास्तों पर मंडराता जोखिम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। शांति के नाम पर चल रही बातचीत अब बारूद की गंध में बदल चुकी है। सीजफायर के झूले पर बैठे ईरान – अमेरिका-इजरायल अब एक दूसरे को परख नहीं बल्कि परास्त करने की मुद्रा में दिखाई दे रहे हैं। आसमान में ड्रोन की गूंज के बाद अब जंग का दायरा समंदर तक फैल चुका है। क्या यह फेज-2 है उस टकराव का जो सिर्फ क्षेत्रीय नहीं वैश्विक संतुलन को हिला सकता है? कूटनीति जब ठहरती है तो बंदूकें बोलने लगती हैं और इस बार उनकी गूंज पानी के भीतर सुनाई दे रही है।

हालिया घटना ने यह साफ कर दिया है कि ईरान और अमेरिका के बीच टकराव अब एक नए चरण में प्रवेश कर चुका है। अमेरिका द्वारा एक ईरानी कार्गो जहाज़ को अपने नियंत्रण में लेना सिर्फ एक सामरिक कदम नहीं बल्कि एक संदेश था समुद्री रास्तों पर उसका वर्चस्व अभी भी कायम है। लेकिन जवाब भी उतना ही तेज आया। ईरान ने ड्रोन के जरिए अमेरिकी जंगी जहाज़ को निशाना बनाते हुए यह संकेत दिया कि अब जंग सिर्फ आसमान तक सीमित नहीं रहेगी बल्कि अब जंग का नया मैदान नीले पानी वाला समंदर होगा। ईरान ने साफ कर दिया है कि यह पलटवार था जवाब था उस गोलीबारी का जो उसके वाणिज्यिक जहाज पर की गई।

डगमगाता सीजफायर का झूला

कूटनीति की मेज खाली हो रही है और समुद्र में लहरें ऊंची। यह सिर्फ दो देशों की जंग नहीं बल्कि उस विश्व व्यवस्था की परीक्षा है जो शांति की बात तो करती है लेकिन युद्ध की आहट पर अक्सर खामोश हो जाती है।

तेल बाजार और तनाव

इस टकराव का असर सिर्फ सैन्य नहीं है। तेल की कीमतों में हलचल समुद्री बीमा दरों में बढ़ोतरी और वैश्विक बाजारों में अनिश्चितता यह सब संकेत हैं कि दुनिया इस संघर्ष को गंभीरता से देख रही है। अगर स्थिति और बिगड़ती है तो इसका सीधा असर एशिया यूरोप और मध्य-पूर्व की अर्थव्यवस्थाओं पर पड़ सकता है। और यही वजह है कि कई अंतरराष्ट्रीय शक्तियां पर्दे के पीछे से इस टकराव को शांत करने की कोशिश में लगी होंगी। सबसे बड़ा सवाल यही है क्या यह यहीं थमेगा? अगर समुद्र में टकराव बढ़ता है तो अगला चरण क्या होगा? सीधे सैन्य ठिकानों पर हमले? या फिर किसी तीसरे देश की भागीदारी? इतिहास बताता है जब बड़े देश सीधे भिड़ते हैं तो असर सीमाओं से बाहर जाता है। और फिलहाल जो संकेत मिल रहे हैं वह यही कहते हैं कि यह संघर्ष अभी खत्म होने से दूर है।

कूटनीति का ठहराव, ईरान का वार्ता से इनकार

जंगी खबरों में सबसे एहम और निर्णायक खबर यह है कि ईरान ने अमेरिका के साथ शांति वार्ता के दूसरे दौर में शामिल होने से इनकार कर दिया। यह कदम केवल बातचीत से पीछे हटना नहीं है यह एक सख्त कूटनीतिक संदेश है। ईरान यह दिखाना चाहता है कि वह दबाव में आकर बातचीत नहीं करेगा। दूसरी ओर अमेरिका के लिए यह एक चुनौती है क्या वह सैन्य दबाव बढ़ाएगा या फिर नए सिरे से कूटनीतिक रास्ता खोजेगा? यह वही मोड़ है जहां कई युद्ध या तो शांत होते हैं या और भड़क जाते हैं। ईरान की सरकारी समाचार एजेंसी आईआरएनए ने कहा है कि ईरान ने अमेरिका के साथ होने वाली शांति वार्ता के दूसरे दौर में शामिल होने से इनकार कर दिया है। बताया जा रहा था कि यह वार्ता जल्द ही पाकिस्तान में होने वाली थी। एजेंसी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर अपने अंग्रेजी अकाउंट पर एक पोस्ट में कहा है कि वार्ता के दूसरे दौर से ईरान की अनुपस्थिति का कारण अमेरिका की बहुत ज्यादा मांगें अव्यवहारिक उम्मीदें बार-बार अपने रुख में बदलाव विरोधाभासी बयान और समुद्री नाकाबंदी हैं। ईरान का मानना है कि यह नाकाबंदी युद्धविराम का उल्लंघन है। आईआरएनए ने यह भी कहा कि इस्लामाबाद में ईरान और अमेरिका के बीच दूसरे दौर की शांति वार्ता को लेकर जो खबरें सामने आई हैं, वे सही नहीं हैं। सिन्हुआ समाचार एजेंसी ने फारसी में प्रकाशित एक रिपोर्ट का हवाला देते हुए यह जानकारी दी। एजेंसी ने अमेरिका की ओर से आई खबरों को मीडिया का खेल और दोषारोपण की रणनीति बताया जिसका मकसद ईरान पर दबाव बनाना है।

जब युद्ध समुद्र में उतरता है, तो बहुत कुछ बदलता है

युद्ध मोर्चा से आ रही खबरों के मुताबिक यहा से कहानी दिलचस्प नहीं खतरनाक हो जाती है। आमतौर पर आधुनिक युद्धों की शुरुआत हवा में होती है ड्रोन, मिसाइल, निगरानी। लेकिन जब वही टकराव समुद्र में उतरता है तो उसका मतलब होता है आपूर्ति व्यापार और वैश्विक अर्थव्यवस्था सीधे निशाने पर हैं। हॉर्मुज स्ट्रेट जैसे क्षेत्र पहले से ही संवेदनशील हैं। दुनिया के बड़े हिस्से का तेल इसी रास्ते से गुजरता है। ऐसे में किसी भी प्रकार की सैन्य गतिविधि सिर्फ दो देशों के बीच का मामला नहीं रह जाती यह वैश्विक संकट का संकेत बन जाती है। अमेरिका की समुद्री मौजूदगी दशकों पुरानी है लेकिन ईरान ने पिछले कुछ वर्षों में अपनी असिमेट्रिक वारफेयर रणनीति को मजबूत किया है। जहां सीधे टकराव की बजाय छोटे तेज और सटीक हमले किए जाते हैं। ड्रोन हमले उसी रणनीति का हिस्सा माने जा रहे हैं।

ईरान से छात्रों की वापसी

अजरबैजान के रास्ते ईरान से भारतीयों की सुरक्षित वापसी जारी है। अब तक 300 से ज्यादा नागरिकों को निकाला जा चुका है जिनमें 189 छात्र शामिल हैं। इसी बीच ईरान ने मशहद एयरपोर्ट से अंतरराष्ट्रीय उड़ानें दोबारा शुरू करने का फैसला लिया है। अजरबैजान के बाकू स्थति भारतीय दूतावास ने आधिकारिक सोशल मीडिया अकाउंट एक्स पर जानकारी साझा करते हुए बताया है कि अजरबैजान में भारत के राजदूत अभय कुमार अजरबैजान के रास्ते ईरान से निकाले गए भारतीय छात्रों के आखिरी बैच से मिले। छह मार्च से अब तक अजरबैजान के रास्ते ईरान 189 छात्रों सहित 300 से ज्यादा भारतीय नागरिकों को सुरक्षित रूप से निकाला गया है।

बीजेपी ने नैतिक रूप से सरकार में बने रहने का अधिकार खो दिया है : अखिलेश

सपा प्रमुख बोले- बीजेपी इस बिल के जरिए महिलाओं का भला नहीं, बल्कि उनके साथ धोखा कर रही थी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखननऊ। महिला आरक्षण बिल पर समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने केंद्र सरकार व भाजपा को घेरा है। सपा प्रमुख ने पलटवार करते हुए इसे महिलाओं के साथ धोखा और वोट बैंक की राजनीति बताया है। उन्होंने बीजेपी की मंशा पर सवाल उठाते हुए कहा कि सरकार आरक्षण देने के बजाय जातिगत जनगणना से बचकर महिलाओं का हक छीनना चाहती थी।

महिला आरक्षण बिल के संसद में गिरने के बाद समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने केंद्र सरकार को आड़े हाथों लिया है। अखिलेश यादव ने कहा कि बीजेपी ने नैतिक रूप से सरकार में बने रहने का अधिकार खो दिया है। उनका आरोप है कि बीजेपी इस बिल के जरिए महिलाओं का भला नहीं, बल्कि उनके साथ धोखा कर रही थी।

अखिलेश यादव ने जोर देकर कहा कि महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए केवल कानून बनाना काफी नहीं है। उन्होंने कहा कि जब तक सामाजिक बाधाओं को दूर नहीं किया जाएगा, पारिवारिक जिम्मेदारियों के नाम पर आने वाली मानसिक जकड़न को तोड़ा नहीं जाएगा और स्कूली स्तर से महिलाओं का आत्मविश्वास नहीं बढ़ाया जाएगा, तब तक यह आरक्षण केवल एक सांकेतिक बनकर रह जाएगा। उनका मानना है कि सच्चा नेतृत्व तभी उभरेगा जब महिलाओं की सही गिनती होगी और उन्हें उनका वाजिब हक मिलेगा।

लोकसभा में परिसीमन बिल गिरने के बाद भाजपा और सपा के बीच राजनीतिक विवाद चरम पर पहुंच गया है। भाजपा ने अपने आधिकारिक एक्स अकाउंट पर सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव का फोटो लगाते हुए उन्हें वांटेड बताया। साथ ही कहा कि आखिरी बार उन्हें टोटी चुराते हुए देखा गया था।

इस पर अखिलेश यादव ने पलटवार करते हुए भाजपा के नेताओं को गद्दार करार दिया। भाजपा, उत्तर प्रदेश के एक्स अकाउंट पर लिखा गया कि अखिलेश यादव महिलाओं के अधिकारों के विरोध में हैं। उन पर संसद में नारी शक्ति के हक का विरोध करने का आरोप है और उन्हें आखिरी बार टोंटी चुराते हुए देखा गया था।

इंडिया गठबंधन बना रहेगा

समारोह से इतर पत्रकारों से बातचीत के दौरान यादव ने कांग्रेस के साथ गठबंधन में उत्तर प्रदेश चुनाव लड़ने की संभावना के बारे में पूछे गए एक सवाल का जवाब देते हुए कहा, इंडिया गठबंधन बना रहेगा, कांग्रेस हमारे साथ रहेगी. हमारे लिए मुद्दा सीट की संख्या नहीं है, मुद्दा जीतने की क्षमता है, जो जीत सकते हैं, उन्हें टिकट मिलेगा.।

भाजपा और उसके संगी-साथी पराजय स्वीकार नहीं कर पा रहे

इसका जवाब देते हुए अखिलेश ने लिखा कि भाजपा और उसके संगी-साथी पराजय स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं। उनमें ये डर बैठ गया है कि देश की 95 प्रतिशत आबादी से बना पीडीए समाज जब भाजपा की करतूतों के खिलाफ एक साथ खड़ा हो जाएगा तो उनका क्या होगा। इन नकारात्मक लोगों ने आजादी से पहले भी देश से गद्दारी की और अंडरग्राउंड रहकर देश को गुलाम बनाने वालों की गुलामी की। इन्होंने पहले भी देश को धोखा देकर अकूत दौलत इकट्ठा की और अब भी कर रहे हैं। न इन्होंने तब हिसाब दिया था और न अब दे रहे हैं।

बीजेपी की राजनीति 'फूट डालो और राज करो' की है

अखिलेश यादव ने सत्तारूढ़ बीजेपी पर तीखा प्रहार करते हुए कहा था कि जनगणना पूरी होने तक महिला आरक्षण विधेयक पर चर्चा नहीं की जानी चाहिए. उन्होंने कहा, असल मायने में विपक्ष ही जनता की आवाज है, बीजेपी की राजनीति 'फूट डालो और राज करो' की रणनीति पर आधारित है, यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा, पहले लोगों के बीच अविश्वास पैदा किया जाता है, फिर उन्हें अलग-अलग समूहों में बांटकर एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा किया जाता है और अंत में डर का इस्तेमाल कर समर्थन हासिल किया जाता है. बीजेपी महिला मतदाताओं के बीच भी विभाजन पैदा करने का प्रयास कर रही है. महिलाएं अब जागरूक हैं और महंगाई, शोषण तथा सामाजिक दबाव जैसे मुद्दों पर ऐसी राजनीति का जवाब देंगी।

27 में सपा सरकार बनाएगी

यूपी में विधानसभा चुनाव 27 को लेकर सियासी हलचल बढ़ी हुई है. इस बीच समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने को कहा कि उनकी पार्टी अगले साल होने वाले विधानसभा चुनावों के बाद उत्तर प्रदेश में सत्ता में वापस आएगी। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि विपक्षी गठबंधन एकजुट रहेगा. इसके साथ ही उन्होंने बीजेपी को भी घेरा। सपा अध्यक्ष यादव एक शादी समारोह में शामिल होने के लिए हरियाणा के रेवाड़ी पहुंचे थे. उन्होंने भारतीय जनता पार्टी पर निशाना साधते हुए कहा कि वह पश्चिम बंगाल समेत इस समय कराए जा रहे विधानसभा चुनावों में हारने वाली है.।

एससी-एसटी व ओबीसी महिलाओं की हकमारी किसी कीमत पर बर्दाश्त नहीं : पल्लवी पटेल

सपा प्रमुख को सिराथू विधायक का समर्थन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश स्थित सिराथू से समाजवादी पार्टी की विधायक और अपना दल (कमेरावादी) की नेता पल्लवी पटेल ने केंद्र सरकार पर बड़ा जुबानी हमला बोला है। लोकसभा के विशेष सत्र के दौरान तीन विधेयकों के पारित न होने के बाद उन्होंने कहा कि एससी,एसटी व ओबीसी महिलाओं की हकमारी किसी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जायेगा।

सपा समेत समूच विपक्ष को बधाई देते हुए पल्लवी ने कहा कि केंद्र की मोदी सरकार वंचित समुदाय की महिलाओं की विरोधी है। हालांकि अपने बयान के दौरान पल्लवी पटेल ने किसी सियासी दल या नेता का नाम नहीं लिया। पत्रकारों से बात करते हुए पल्लवी ने कहा कि मुझे लगता है कि केंद्र सरकार और बीजेपी को भूलने की बीमारी हो गई है। इनकी मानसिक स्थिति भी ठीक नहीं लगती, क्योंकि 24 में ये 400 पार का दावा

कर रहे थे और अब सीमित हो गए हैं। इसके बाद से ये सदमे में हैं और इन्हें जैसे सब भूल गया है। उन्होंने कहा कि ये कैसे भूल सकते हैं कि 23 में लोकसभा में महिला आरक्षण बिल खुद इन्होंने ही पेश किया था। और पूरे विपक्ष ने सर्वसम्मति से उसे मजबूती से पास कराया था। ये उनकी ही दस्तावेज़ों में दर्ज है, मैं कोई नई बात नहीं कह रही हूँ।

उस समय यह बड़ी हेडलाइन बनी थी कि देश में महिला आरक्षण बिल पास हो गया। तो अब यह कैसे गिर गया? जब एक बार पास हो गया था, तो उसे लागू करने का समय था।

महिला आरक्षण कैसे गिर गया?

सिराथू विधायक ने कहा कि जब 16, 17 और 18 अप्रैल का विशेष सत्र बुलाया गया, पहले दिन संविधान संशोधन और परिसीमन पर चर्चा चल रही थी. उसी दौरान केंद्र सरकार ने 16 अप्रैल की रात में चुपचाप महिला आरक्षण को लागू कर दिया, जिसकी नोटिफिकेशन सबने देखी होगी। उन्होंने कहा कि यह भी अखबारों में बड़ी खबर बनी थी. तो फिर लागू होने के बाद महिला आरक्षण कैसे गिर गया? असल में जो गिरा है, वह परिसीमन है। पल्लवी ने कहा कि मैं पूरे विपक्ष को बार-बार सलाम करती हूँ कि उन्होंने महिला-पुरुष की राजनीति से ऊपर उठकर लोकतंत्र को बचाने का काम किया, संविधान को सामने रखकर और उसके नियमों का हवाला देते हुए उन्होंने परिसीमन और संविधान संशोधन विधेयक को गिराने का काम किया।

बार-बार कांग्रेस का नाम लेना प्रधानमंत्री की घबराहट को दर्शाता है : सुप्रिया श्रीनेत

महिला आरक्षण और परिसीमन पर राजनीति कर रही भाजपा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस नेत्री सुप्रिया श्रीनेत ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के राष्ट्र के नाम संबोधन पर तीखी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने पीएम के भाषण में कांग्रेस का बार-बार जिक्र होने पर तंज कसते हुए कहा कि प्रधानमंत्री ने अपने 29 मिनट के भाषण में 58 बार कांग्रेस का नाम लिया। उन्होंने सवाल उठाया कि अगर कांग्रेस पार्टी नहीं होती, तो प्रधानमंत्री किस नाम की माला जपते? उन्होंने कहा कि यह प्रधानमंत्री की घबराहट को दर्शाता है।

सुप्रिया श्रीनेत ने आरोप लगाया कि सरकार महिला आरक्षण को एक %राजनीतिक ढाल के रूप में इस्तेमाल कर रही है। उनका कहना है कि मोदी सरकार महिला आरक्षण की आड़ में %अलोकतांत्रिक परिसीमन% करना चाहती है ताकि वह जाति जनगणना के मुद्दे से बच सके। उन्होंने कहा कि उनकी यह योजना अब पूरी तरह बेनकाब हो चुकी है और प्रधानमंत्री इसी कारण घबराए हुए हैं। उन्होंने

मांग की कि सरकार सभी शर्तों को हटाकर बिना देरी के महिलाओं को 543 सीटों में से 181 सीटें दें। कांग्रेस प्रवक्ता ने बीजेपी सरकार के महिलाओं के प्रति रिकॉर्ड पर गंभीर सवाल खड़े किए। उन्होंने कहा कि लोकसभा में बीजेपी के मात्र 12.9 फीसदी सांसद महिला हैं और देश भर में उनके 10 प्रतिशत से भी कम विधायक महिलाएं हैं। श्रीनेत ने हाथरस और मणिपुर जैसी घटनाओं का हवाला देते हुए पीएम मोदी के महिला सम्मान के दावे को कमजोर बताया। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि देश की महिलाएं सब देख और समझ रही हैं और समय आने पर वे अपने अपमान का हिसाब जरूर लेंगी। सुप्रिया श्रीनेत ने यह भी आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री सरकारी संसाधनों का दुरुपयोग कर रहे हैं।

मोदी मंत्रिपरिषद में गिनीं-चुनीं 5 महिलाएं : अफजाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। देशभर में महिला आरक्षण संशोधन विधेयक को लेकर घमासान जारी है, बिल गिरने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश को संबोधित किया। उनके संबोधन पर विपक्ष की ओर से लगातार निशाना साधा जा रहा है। बीजेपी भी विपक्ष पर महिलाओं का अपमान करने का आरोप लगा रही है। इस बीच सपा सांसद अफजाल अंसारी ने प्रधानमंत्री मोदी और महिला आरक्षण को लेकर बड़ा बयान दिया है. उन्होंने कहा कि महिलाएं उनको माफ नहीं करेंगी ।

सपा सांसद अफजाल अंसारी ने कहा कि इन लोगों ने महिलाओं को पार्टी में उनका अधिकार नहीं दिया, इनके मंत्रिपरिषद में भी गिनीं-चुनीं 5 महिलाएं हैं, उन्होंने आगे कहा

महिलाएं उनको माफ नहीं करेंगी

कि वह अपना प्रायश्चित करने की बात कर रहे हैं. आप लोगों को भी यह समझना चाहिए। सरकार ने चाल चली थी कि वह परिसीमन बिल लाने वाली थी. सरकार महिलाओं को हिस्सा नहीं देना चाहती थी, लेकिन आज उनकी चालबाजी की हार हुई 23 में ही महिला बिल सर्वसम्मति से पास हो चुका है, इसे क्यों नहीं लागू किया गया है।

अवधेश प्रसाद ने सरकार पर साधा निशाना

समाजवादी पार्टी के सांसद अवधेश प्रसाद ने कहा कि ये महिला बिल नहीं, बल्कि भाजपा द्वारा योजनाबद्ध राजनीतिक खेल था. इस खेल में 11 साल बाद सदन के अंदर सरकार घिरी और बहुमत से पीछे रही. वे जैसे हारे, उसके एक मिनट के अंदर पर्चा बंटने लगा. क्या उन्हें पहले पता था कि बिल गिर जाएगा? उन्होंने सरकार पर राजनीतिक चाल चलने का आरोप लगाते हुए कहा, सरकार इस चाल में थी कि यह बिल गिरेगा, और इसका आपेक्ष विपक्ष पर चलेगा। विपक्ष पूरी तरह से महिलाओं और उन्हें सम्मान देने के पक्ष में है।

संसद में प्रियंका की दहाड़ से भाजपा सहमी

21 मिनट में नेहरू की विरासत का बखान

- पीएम से लेकर गृहमंत्री तक हलकान
- महिला आरक्षण बिल के बहस में दिखाई मुखरता

4पीएम न्यूज नेटवर्क

नई दिल्ली। गुरुवार को लोकसभा की कार्यवाही एक ऐतिहासिक दृश्य की गवाह बनी। वायनाड की नवनिर्वाचित सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने सदन में अपना पहला प्रमुख भाषण दिया। उन्होंने नारी वंदन अधिनियम पर चर्चा करते हुए सत्ता पक्ष के पसीने छुड़ा दिये। उनके भाषण देने के अंदाज से ऐस लगा जैसे पूर्व पीएम इंदिरा गांधी संसद में साक्षात आ गई हों।

महज 21 मिनट के अपने संबोधन में प्रियंका ने न केवल अपनी वाकपटुता (भाषण कला) का लोहा मनवाया, बल्कि संयम और तीखे प्रहारों के अनूठे मेल से सत्तापक्ष को भी निरुत्तर कर दिया। उनका भाषण, जिसमें संयम और तीखी आलोचना का मेल था, सदन में सबसे अलग दिखा; यह सदन अक्सर तीखे ध्रुवीकरण के लिए जाना जाता है। कड़वाहट या नाम लेकर बुरा-भला कहे बिना, उन्होंने मुस्कुराते हुए तीखे वार किए -जिससे गृह मंत्री अमित शाह भी हंस पड़े, विपक्षी खेमे में जोश भर गया, और राहुल गांधी से उन्हें खूब तारीफ मिली।

मोतीलाल व जवाहरलाल नेहरू का किया जिक्र

उन्होंने आगे बताया कि यह मोतीलाल नेहरू ही थे जिन्होंने 1928 में एक रिपोर्ट तैयार की थी, जिसमें 19 मौलिक अधिकारों की सूची थी, और उन्होंने ही इस रिपोर्ट को कांग्रेस कार्यसमिति के सामने पेश किया था। 1931 में, सरदार पटेल की अध्यक्षता में कराची में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ था। उसी कराची अधिवेशन में यह प्रस्ताव पारित किया गया था, जिसने हमारे देश की राजनीति में महिलाओं के समान अधिकारों को शामिल करने की शुरुआत की। उसी समय, हमारी राजनीति में 'एक वोट, एक नागरिक, एक मूल्य' का सिद्धांत भी स्थापित हुआ। उन्होंने आगे कहा कि अमेरिका जैसे देशों को ऐसे अधिकार हासिल करने में कहीं ज्यादा समय लगा, जिससे भारत के शुरुआती कदम अपने आप में अनोखे बन जाते हैं।

महज 20 मिनट से कुछ अधिक समय में, प्रियंका गांधी वाड्रा ने लोकसभा में अपनी उपस्थिति दर्ज करा दी - विरासत, तैयारी और तीक्ष्ण राजनीतिक संदेश को संतुलित करते हुए, उन्होंने सहयोगियों और विरोधियों दोनों को ध्यान देने के लिए मजबूर कर दिया।

तैयारी और प्रस्तुति का मेल

उनके इस आत्मविश्वास भरे भाषण के पीछे गहरी तैयारी थी। कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता ने इंडिया टुडे को बताया कि प्रियंका गांधी कागज की शीट पर लिखे मुख्य बिंदुओं के साथ सदन में आई थीं; उन्होंने इन बिंदुओं का इस्तेमाल मुख्य रूप से तथ्यों की सटीकता के लिए किया, जबकि ज्यादातर बातें उन्होंने अपनी सहज समझ और सूझबूझ से कहीं।

सत्ताधारी पक्ष को जमकर घेरा

उन्होंने अपने भाषण की शुरुआत सत्ताधारी पक्ष पर तंज कसते हुए कहा यह पक्ष अक्सर भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का जिक्र करके अतीत की गलतियों को उजागर करता रहता है। इस बात का सीधा जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि वह कुछ ऐतिहासिक संदर्भ देना चाहती हैं, भले ही सत्ताधारी पक्ष को यह बात अच्छी न लगे। उन्होंने कहा मैं इस विषय पर थोड़ी पृष्ठभूमि बताना चाहूँगी। क्योंकि प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में इस बारे में बहुत कुछ कहा कि इसे किसने रोका, कैसे रोका गया, और कैसे इस फैसले को 30 साल तक लटकाए रखा गया। सत्ताधारी पार्टी में मेरे साथियों को शायद यह बात अच्छी न लगे, लेकिन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि यह है कि इसकी शुरुआत भी नेहरू नाम के एक व्यक्ति ने ही की थी। इसके बाद उन्होंने हल्के-फुल्के अंदाज में (व्यंग्य करते हुए) जोड़ा, लेकिन चिंता मत कीजिए, यह वह नेहरू नहीं हैं जिनसे आप इतना कतराते हैं।

बिहार में नीतीश का विकल्प बनेंगे निशांत!

डिप्टी सीएम का पद ठुकराया, संगठन में लेंगे अनुभव

- सम्राट चौधरी को बताया 'बड़ा भाई'
- नई सरकार को निशांत कुमार का समर्थन

4पीएम न्यूज नेटवर्क

पटना। बिहार में नई सरकार का गठन हो गया है। बीजेपी के सम्राट ने सीएम की कुर्सी हासिल कर ली है। इन सबके बीच एक कयास जो लगाया जा रहा था कि नीतीश कुमार के बेटे निशांत डिप्टी सीएम बनेंगे तो फिलहाल उस पर विराम लग गया। जदयू की अंदरखाने से ये खबर आई की निशांत ने खुद ही यह पद ठुकरा दिया।

उन्होंने कहा कि वह संगठन में रहकर अभी अनुभव प्राप्त करेंगे उसके बाद ही किसी पद पर बैठने का फेसला करेंगे। इस बीच उन्होंने मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी को बड़ा भाई बताते हुए पूर्ण समर्थन व्यक्त किया है। उन्होंने अपने राजनीतिक भविष्य पर अटकलों को समाप्त करते हुए अब सक्रिय रूप से पार्टी संगठन को मजबूत करने और अपने पिता के अधूरे कार्यों को आगे बढ़ाने की घोषणा की है।

सम्राट चौधरी बिहार को नई दिशा देंगे

निशांत ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि सम्राट चौधरी बिहार को नई दिशा देंगे और वह उनके नेतृत्व में काम करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि उनके पिता व उनका पूरा सहयोग नई सरकार के साथ रहेगा। निशांत ने स्पष्ट किया कि अब वह जनता के बीच जाएंगे और पार्टी संगठन को मजबूत करने की दिशा में सक्रिय भूमिका निभाएंगे। उन्होंने कहा कि वह अपने पिता के अधूरे सपनों को आगे बढ़ाने का प्रयास करेंगे। निशांत कुमार का यह बयान ऐसे समय आया है, जब नई सरकार के गठन के बाद उनके राजनीतिक भविष्य को लेकर अटकलें लगाई जा रही थीं।

उपमुख्यमंत्री बनाए जाने की संभावनाओं पर हुई थी चर्चा

सूत्रों के मुताबिक, सरकार गठन से पहले उन्हें उपमुख्यमंत्री बनाए जाने की संभावनाओं पर चर्चा हुई थी और 14 अप्रैल की दोपहर तक उन्हें इस पद के लिए मनाने की कोशिशें जारी रहीं लेकिन उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया। नीतीश कुमार ने मंगलवार को अपने पद से इस्तीफा दिया था। बिहार के नवनियुक्त मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने बृहस्पतिवार को कहा कि वह सिख गुरु गोबिंद सिंह से प्रेरणा लेकर बिहार और देश को समृद्ध बनाने के लिए काम करेंगे। चौधरी ने यहां पटना साहिब गुरुद्वारे का दौरा किया, जो सिखों के 10वें गुरु गोबिंद सिंह से जुड़ा पवित्र स्थल है।

बिहार में नई सरकार के गठन के बाद बृहस्पतिवार को पूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के पुत्र निशांत कुमार बृहस्पतिवार दोपहर पहली बार जनता दल यूनाइटेड (जदयू) के प्रदेश कार्यालय पहुंचे। इस दौरान पत्रकारों ने उनसे कई सवाल पूछे। हालांकि, पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने नई सरकार के नेतृत्व को लेकर खुलकर समर्थन जताया। निशांत ने मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी को अपना बड़ा भाई बताते हुए बधाई दी, साथ ही उपमुख्यमंत्री विजय कुमार चौधरी को भी शुभकामनाएं दीं। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता चौधरी ने बुधवार को बिहार के 24वें मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली थी। यह पहली बार है, जब राज्य में भाजपा का कोई नेता शीर्ष पद पर काबिज हुआ है। चौधरी ने कहा कि मैं गुरु गोबिंद सिंह जी से प्रेरित हूं। मैं प्रार्थना करता हूं कि उनका आशीर्वाद बिहार के लोगों पर बना रहे और राज्य के साथ-साथ देश भी समृद्धि के मार्ग पर आगे बढ़े।

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

श्रमिकों की इन हालातों का जिम्मेदार कौन!

"जिसतरह से मजदूरों ने अपना वेतनमान बढ़ाने के लिए ये रास्ता अपनाया कई सही नहीं ठहाराया लेकिन इसमें कोई दो राय नहीं श्रमिकों उतना वेतन नहीं मिलता जितना उनको मिलना चाहिए। अब सवाल ये उठता है कि इसके लिए जिम्मेदार कौन है। सरकारें आंदोलनों में बाहरी हाथ होने की बात कह कर अपनी जिम्मेदारी से नहीं बच सकती हैं।

यूपी के सबसे विकसित व माडर्न शहरों में एक नोएडा में चला श्रमिकों का दो दिन का प्रदर्शन आज मजदूरों के हालात को बयां करता है। जिस तरह से मजदूरों ने अपना वेतनमान बढ़ाने के लिए ये रास्ता अपनाया कई सही नहीं ठहाराया लेकिन इसमें कोई दो राय नहीं श्रमिकों उतना वेतन नहीं मिलता जितना उनको मिलना चाहिए। अब सवाल ये उठता है कि इसके लिए जिम्मेदार कौन है। सरकारें आंदोलनों में बाहरी हाथ होने की बात कह कर अपनी जिम्मेदारी से नहीं बच सकती हैं। साथ उन नियोक्ताओं का भी कर्तव्य है कि वह अपनी कंपनी में काम कर रहे मजदूरों की मेहनताना की समीक्षा करके उसमें समयानुकुल बढ़ोत्तरी करे ताकि उनके श्रमिक को चिंता न रहे और वह मेहनत से काम करते कंपनी की प्रोडक्टिविटी को और बढ़ा सके। हमारे देश के राजनेता भले ही चुनावों के दौरान सामाजिक न्याय सम्बन्धी तरह-तरह की बातें करते हैं, मनगढ़ंत आंकड़े गिनाते/बताते हैं, लेकिन उनकी नाक के नीचे श्रमजीवियों का अंतहीन शोषण होता रहता है, जिससे उनका मुंह फेरे रहना या फिर किसी बड़े आंदोलन के बाद सक्रिय होना उनके नेतृत्वकारी भूमिका पर सवाल उठाता है।

आमतौर पर प्रशासनिक अधिकारियों और उद्योगपतियों की मिलीभगत से किस कदर श्रमजीवी मजदूरों का शोषण अनवरत रूप से जारी रहता है और फिर एक दिन नोएडा मजदूर आंदोलन के शक्ल में फूट पड़ता है, इसका यह ताजा उदाहरण है। इसी प्रवृति से नई आर्थिक नीति विफलता के कगार पर खड़ी है। नीति निर्माण में नेताओं/नौकरशाहों ने जो पक्षपात दिखाया है, वह सभी समस्याओं की जड़ है। यक्ष प्रश्न यह कि जिस देश में महंगी शिक्षा, महंगा स्वास्थ्य और खर्चीला शहरी जीवन का बोलबाला हो, वहां पर निजी क्षेत्र के असमान वेतन स्तर के लिए हमारे नीति निर्माता जिम्मेदार नहीं हैं तो कौन है, वही बताएं। विपक्ष का काम संसद में, विधान मंडल में इन्हीं पहलुओं पर तर्कसंगत बहस करना है, लेकिन वह भी नीतिगत नकारापन का शानदार नमूना बन चुका है। दिलचस्प तो यह कि पहले सत्ताधारी यूपीए के वक्त एनडीए विपक्ष में था और अब सत्ताधारी एनडीए के वक्त यूपीए/इंडिया गठबंधन विपक्ष में है। चूंकि दोनों पूंजीवादी गठबंधन हैं और अपने आर्थिक मोहपाश में जनोन्मुखी समाजवादी व वामपंथी सियासत को बांध चुके हैं, जिससे सबकुछ गड्डमड्ड हो चुका है। कहीं जातिवाद, कहीं क्षेत्रवाद और कहीं सम्प्रदायवाद के नाम पर परस्पर बंटी हुई जनता को अपनी मौलिक जरूरतों का एहसास ही नहीं है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

आम की सोच को बौना बनाती 'खास संस्कृति'

विश्वनाथ सचदेव

खबर मध्य प्रदेश के रायसेन में सांची रोड पर हुई एक सड़क-दुर्घटना की है। इस दुर्घटना में एक पत्रकार की मृत्यु हो गयी। बताया जा रहा है कि घायल को अस्पताल पहुंचाने के लिए समय पर एंबुलेंस नहीं मिल पायी, अन्यथा पत्रकार की शायद जान बच सकती थी। इस तरह की कोई अनोखी घटना नहीं है यह। अक्सर होता रहता है ऐसा। अक्सर आम आदमी को एंबुलेंस-सेवा का समय पर लाभ नहीं मिल पाता। अक्सर मंत्रियों की कारों के काफिले सायरन बजाते, धूल उड़ाते आम आदमी को अंगूठा दिखाते, सड़कों पर आगे निकल जाते हैं। लाल और नीली बत्तियों वाले यह काफिले उस संस्कृति का एक चेहरा हैं जिसे आम बोल-चाल की भाषा में 'वीआईपी कल्चर' यानी विशिष्ट लोगों की व्यवस्था कहा जाता है। राजनीति में इस व्यवस्था का चेहरा अक्सर दिख जाता है।

मंत्रियों के कारों को किसी रुकावट का सामना न करना पड़े, इसके लिए आम जनता की कारें कहीं भी, और कभी भी, रोकी जा सकती हैं। सुरक्षा के नाम पर ऐसी व्यवस्था की गयी है कि किसी मंत्री की कार को 'अकेले' कहीं आना-जाना न पड़े। उनकी गाड़ी के आगे भी गाड़ियां होती हैं, पीछे भी। माना जाता है इससे शासक का रुतबा बढ़ता है! इसी रुतबे का नाम है वीआईपी कल्चर यानी विशिष्ट जनों वाली राजनीतिक संस्कृति। इस संस्कृति की पहचान सिर्फ कारों का काफिला नहीं होती। 'बड़े लोग' कई-कई तरीकों से अपना बड़ा होना सिद्ध करने की कोशिश में लगे रहते हैं। कथित बड़े लोगों के बच्चे सरकारी अस्पतालों में नहीं पैदा होते। उनके लिए शानदार और महंगे अस्पताल हैं। यह बच्चे सरकारी स्कूलों में भी नहीं पढ़ते। सरकारी स्कूल तो आम आदमी के लिए होते हैं। आम आदमियों के बच्चों के लिए सरकारी स्कूल हैं जहां न बच्चों के लिए बैठने की उचित व्यवस्था होती है न ठीक-ठाक दिखने वाले स्कूली इमारत की। अक्सर ऐसे खस्ता हाल स्कूलों के बारे में समाचार छपते, प्रसारित होते रहते हैं, पर स्थिति में कोई परिवर्तन आता नहीं दिखता। सरकारी अफसरों, राजनेताओं, पैसे वालों के बच्चों के लिए वीआईपी कल्चर में खास स्कूल होते हैं।

खास यानी महंगे। हां, इनका महंगा होना इनकी पहली पहचान और खासियत है। माना जाता है कि इन महंगे स्कूलों की पढ़ाई भी अच्छी होती है। इस अच्छेपन की परिभाषा भी अलग-अलग होती है। एक परिभाषा यह है कि इन स्कूलों की इमारतें शानदार हों, यहां पढ़ने वाले बच्चे कारों या टैक्सियों में आयें, अच्छे कपड़े पहने हों। कक्षाएं एयरकंडीशन्ड हों। यहां पढ़ाई जाने वाली किताबें भी महंगी होती

हैं और पढ़ाने वाले अध्यापक भी! देखा जाये तो सांची रोड पर होने वाली सड़क दुर्घटना में इस महंगी शिक्षा यानी, वीआईपी कल्चर का कोई सीधा संबंध नहीं दिखता, पर रिश्ता है। यह रिश्ता आदमी को आम और खास आदमी में बांटने वाला है। खास यानी जिसके लिए खास व्यवस्था हो। आम वर्ग की तुलना में यह खास वर्ग बहुत छोटा है, पर इसका प्रभाव बहुत बड़ा माना जाता है। विडंबना यह है कि यह छोटा वर्ग समाज की सोच पर हावी ही नहीं रहता, लगातार इस कोशिश में भी रहता है कि उसका प्रभाव बड़ा हो ही नहीं, बड़ा दिखे भी। बड़ा दिखने की यह लालसा ही 'वीआईपी कल्चर' को जन्म देती, उसे पालती-पोसती है। मजे की बात यह है कि इस लालसा की अक्सर आलोचना होती है, इसे समाप्त करने के वादे और दावे भी किये जाते हैं, पर व्यवहार में ऐसा होता नहीं दिखता। दिखना चाहिए। हमारे पड़ोसी राष्ट्र नेपाल की नयी सरकार ने एक रास्ता दिखाया है इस विशिष्ट 'संस्कृति' वाली मानसिकता को समाप्त करने का। इसी मार्च, 2026 में वहां चुनाव हुए थे। इस चुनाव के बाद एक ऐतिहासिक बदलाव आया है वहां की राजनीति में। देश के नये और युवा प्रधानमंत्री, 36 वर्षीय बालेन शाह, ने दशकों पुराने राजनीतिक दलों का वर्चस्व ही समाप्त नहीं किया, एक समतावादी राजनीतिक संस्कृति को स्थापित करने का संकल्प भी लिया है। देश में आदेश जारी कर दिया गया है कि मंत्रियों की कारों के काफिले नहीं चलेंगे, सड़कों पर दौड़ती उनकी कारें सायरन नहीं बजाएंगी, यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाला चाहे कोई भी हो, उसके साथ कानून एक जैसा व्यवहार करेगा। एक बड़ा बदलाव यह भी है कि अब नेपाल में बच्चे, चाहे वे मंत्री के हों या संत्री के, सामान्य कर्मचारियों के अथवा किसी अफसर के, सरकारी स्कूल में ही पढ़ेंगे।

वीआईपी कल्चर को समाप्त करने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम है, और यदि सफल हो जाता है तो छोटा-सा देश नेपाल समतावादी समाज की रचना की दिशा में एक बड़ा उदाहरण प्रस्तुत करेगा। अक्सर इस तरह की लोक-लुभावन घोषणाएं शासक-वर्ग करता है। हमारे देश में भी कई बार इस तरह की घोषणाएं होती रही हैं, पर देखा यह भी गया है कि जल्दी ही घोषणाएं भुला दी जाती हैं। कुछ साल पहले ही जब दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार बनी थी, तो बड़े जोर-शोर से यह घोषणा हुई थी कि आम आदमी पार्टी के मंत्री बड़ी-बड़ी कारों में नहीं चलेंगे, बड़े बंगलों में नहीं रहेंगे।

पर्यावरण के लिए गंभीर चेतावनी बनता डिजिटल प्रदूषण

डॉ. सुधीर कुमार

जब हम 'प्रदूषण' शब्द सुनते हैं, तो हमारे मस्तिष्क में जहरीला धुआं उगलती चिमनियां, प्लास्टिक से पटी नदियां या सड़कों पर लगा कचरे का ढेर उभरता है। ये प्रदूषण के वे रूप हैं जिन्हें हम देख सकते हैं और महसूस कर सकते हैं। लेकिन इक्कीसवीं सदी की डिजिटल क्रांति के साथ एक ऐसा अदृश्य जहर हमारे वातावरण और जीवन में घुल चुका है, जिसे हम देख नहीं सकते, सूंघ नहीं सकते, लेकिन वह धीरे-धीरे हमारे पर्यावरण और मानसिक स्वास्थ्य को खोखला कर रहा है। इसे हम 'डिजिटल प्रदूषण' कहते हैं। भारत जैसे देश में, जहां डिजिटल साक्षरता और कनेक्टिविटी चरम पर है और 'डिजिटल इंडिया' का सपना साकार हो रहा है, इस अदृश्य खतरे पर कानून, नीति और जनजागरूकता के नजरिये से चर्चा करना अनिवार्य हो गया है। लोग डिजिटल प्रदूषण को केवल 'ई-वेस्ट' यानी पुराने मोबाइल, टूटे लैपटॉप या खराब चार्जर तक सीमित मान लेते हैं।

बेशक, ई-कचरा एक वैश्विक समस्या है, लेकिन डिजिटल प्रदूषण का एक बहुत बड़ा हिस्सा 'अभौतिक' है। इंटरनेट पर हमारा हर क्लिक, सर्च और क्लाउड स्टोरेज बिजली की भारी खपत करता है, जो अधिकांशत: जीवाश्म ईंधन से आती है और कार्बन उत्सर्जन बढ़ाती है। जब हम डेटा इस्तेमाल करते हैं, तो हजारों मील दूर स्थित विशाल डेटा सेंटर्स सक्रिय हो जाते हैं, जिन्हें चलाने और ठंडा रखने के लिए अत्यधिक ऊर्जा और पानी की आवश्यकता होती है। अत:, डिजिटल गतिविधियों का सीधा और गहरा प्रभाव हमारे पर्यावरण पर पड़ता है। डिजिटल प्रदूषण के दो सबसे घातक पहलू 'डार्क डेटा' और 'डिजिटल फुटप्रिंट' हैं। 'डार्क डेटा' वह अनुपयोगी डेटा है जो कंपनियों और व्यक्तियों द्वारा केवल स्टोर किया जाता है, जिसका दुनिया भर के कॉर्पोरेट डेटा में हिस्सा लगभग 52 प्रतिशत है। यह डेटा केंद्रों में व्यर्थ ऊर्जा की खपत करता है। वहीं, हमारा 'डिजिटल फुटप्रिंट' भी उतना ही खतरनाक है; एक स्पैम ईमेल अपने पूरे जीवनचक्र में लगभग 0.3 ग्राम कार्बन डाइऑक्साइड पैदा करने का जिम्मेदार है।

यदि हम दुनियाभर में प्रतिदिन भेजे जाने वाले अरबों स्पैम और अनावश्यक ईमेल की गणना करें, तो यह प्रदूषण का स्तर वैश्विक विमानन उद्योग द्वारा फैलाए जाने वाले कुल उत्सर्जन के बराबर पहुंच जाता है। यह तथ्य हमें सोचने पर मजबूर करता है कि हमारी एक छोटी-सी डिजिटल लापरवाही धरती के तापमान को बढ़ाने में कितनी बड़ी भूमिका निभा रही है। भारत में 'डिजिटल प्रदूषण' को सीधे तौर पर परिभाषित करने वाला कोई विशिष्ट या एकल कानून मौजूद नहीं है। पर्यावरण संरक्षण अधिनियम (1986) और समय-समय पर संशोधित ई-कचरा प्रबंधन नियम (2016/2022) इसके केवल भौतिक हिस्से (हार्डवेयर कचरे) को कवर करते हैं। असली चुनौती डेटा केंद्रों से होने वाले ऊर्जा उत्सर्जन और 'डिजिटल हाइजीन' की है, जिसके लिए वर्तमान में स्पष्ट कानूनी दिशानिर्देशों की कमी खलती है।

भारत के संविधान के अनुच्छेद 21 (जीवन का अधिकार) की व्याख्या करते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने कई बार 'स्वच्छ पर्यावरण के अधिकार' को एक मौलिक अधिकार के रूप में स्थापित किया है। यद्यपि ये मामले पारंपरिक औद्योगिक प्रदूषण से संबंधित थे, लेकिन इनमें स्थापित 'प्रदूषण फैलाने वाला भुगतान करेगा' और 'एहतियाती सिद्धांत' का दर्शन डिजिटल दुनिया की बड़ी टेक कंपनियों पर भी समान रूप से लागू होना चाहिए। जो कंपनियां विशाल डेटा सेंटर चलाती हैं और करोड़ों भारतीयों का डेटा प्रोसेस करती हैं, वे डेटा की सुरक्षा के साथ-साथ अपनी पर्यावरणीय जिम्मेदारी से पल्ला नहीं झाड़ सकतीं। 'भारत सरकार द्वारा 'राइट टू रिपेयर' पोर्टल का शुभारंभ एक क्रांतिकारी पहल है। कानूनी और नीतिगत रूप से यह उपभोक्ताओं को सशक्त बनाता है कि वे अपने गैजेट्स को कंपनियों के एकाधिकार से बाहर निकलकर ठीक करा सकें। यह पहल न केवल कंपनियों की 'प्लांड ऑब्सेसलेंस' (गैजेट्स को जानबूझकर ऐसा बनाना कि वे जल्दी खराब हो जाएं) की नीति पर लगाम लगाएगी, बल्कि इलेक्ट्रॉनिक कचरे को कम करने में भी मील का पत्थर साबित होगी। जब कोई उपकरण लंबा चलेगा, तो उसके निर्माण में लगने वाली ऊर्जा और उसके कचरे से होने वाले प्रदूषण में स्वत: कमी आएगी।' केवल कानून और अदालती आदेश डिजिटल प्रदूषण का पूर्ण समाधान नहीं हैं; इसके लिए 'डिजिटल स्वच्छता' को जीवनशैली बनाना अनिवार्य है।

शुरुआत इनबॉक्स की सफाई, अनावश्यक न्यूजलेटर्स को अनसब्सक्राइब करने और क्लाउड स्टोरेज से धुंधली तस्वीरों व पुराने बैकअप को हटाकर की जा सकती है। इसके साथ ही, वीडियो स्ट्रीमिंग के दौरान 'अति-उच्च परिभाषा' के बजाय सामान्य स्पष्टता का चुनाव करना डेटा केंद्रों पर दबाव और बिजली की खपत को कम करता है। यह 'डिजिटल क्लीन-अप' न केवल डेटा व्यवस्थित करता है, बल्कि ऊर्जा की बचत कर पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अब सरकार को 'ग्रीन डेटा कानूनों' के माध्यम से टेक कंपनियों को अक्षय ऊर्जा (सौर, पवन) अपनाने और डेटा केंद्रों की ऊर्जा दक्षता बढ़ाने के लिए जवाबदेह बनाना होगा। हमें समझना होगा कि डेटा भले ही आभासी हो, पर उसे चलाने वाली ऊर्जा भौतिक है, जो धरती को प्रभावित करती है। आज समय की मांग है कि हम 'डिजिटल डिटॉक्स' के साथ-साथ 'डिजिटल क्लीन-अप' को अपनाएं।

नमक का कम सेवन

किडनी स्टोन से बचने का पहला नियम है नमक की मात्रा कम करना। 24 घंटे में नमक का सेवन 5 ग्राम से कम करने पर यूरिन में कैल्शियम का रिसाव काफी कम हो जाता है। चाहे वह साधारण रिफाइंड नमक हो या हिमालयन पिंक साल्ट, सभी में सोडियम की मात्रा लगभग समान होती है। जब शरीर में सोडियम अधिक होता है, तो किडनी यूरिन के जरिए अधिक कैल्शियम बाहर निकालती है, जो आगे चलकर पथरी का रूप ले लेता है। इसके अलावा ब्लड प्रेशर के मरीजों को अपने खाने में नमक की मात्रा को कम रखनी चाहिए। अगर आप हाई ब्लड प्रेशर के मरीज हैं तो कोशिश करें कि नमक कम खाएं। नमक की मात्रा ज्यादा लेते हैं, तो इससे पेशाब से ज्याद कैल्शियम निकलता है। जिससे ओस्टियोपोरोसिस जैसी हड्डियों से जुड़ी समस्याएं हो सकती है। यानि नमक का ज्यादा सेवन हड्डियों को कमजोर बना सकता है। नमक की ज्यादा मात्रा दिमाग के फंक्शन को भी प्रभावित करती है।

सावधानी ही सबसे बड़ा बचाव है

किडनी स्टोन की समस्या से बचने के लिए महंगे इलाज से बेहतर जीवनशैली में ये तीन छोटे बदलाव करना है। नमक कम करें, खट्टे फलों का सेवन बढ़ाएं और खुद को हमेशा हाइड्रेटेड रखें। अगर इन नियमों का नियमित पालन किया जाए, तो भविष्य में होने वाली दर्दनाक सर्जरी और दवाओं के भारी खर्च से बचा जा सकता है।

साइट्रस फलों का सेवन बढ़ाएं

किडनी में पथरी के जोखिम को कम करने के लिए डाइट में नींबू, संतरा, मौसमी और कीवी जैसे खट्टे फलों को शामिल करना जरूरी है। इनमें मौजूद साइट्रेट यूरिन में कैल्शियम को जमने से रोकता है। साथ ही इसके विपरीत ऑक्सिलेट रिच फूड्स जैसे पालक, शकरकंद और चुकंदर का सेवन सीमित करना जरूरी है। जब यूरिन में ऑक्सिलेट कम होगा, तो कैल्शियम को बाइंड होने के लिए तत्व नहीं मिलेंगे और पथरी बनने की प्रक्रिया धीमी हो जाएगी। क्योंकि खट्टे फलों में विटामिन सी की मात्रा ज्यादा होती है। इसलिए इनका सेवन शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाने में मदद कर सकता है और सर्दी, खांसी और वायरल इंफेक्शन से दूर रख सकता है। अगर आप बार-बार बीमार पड़ते हैं, तो आपके लिए खट्टे फलों का सेवन फायदेमंद हो सकता है।

पथरी के मरीज करें ये तीन काम

किडनी में पथरी होना एक ऐसी गंभीर समस्या है जिसे अगर समय रहते ध्यान न दिया जाए तो जानलेवा भी हो सकती है। ध्यान देने वाली बात यह है कि हमारे देश की एक बड़ी आबादी इस समस्या से परेशान है। किडनी में पथरी होने का बाद अपने आहार में कुछ सावधानियां बरतनी जरूरी होती हैं। अधिकांश किडनी स्टोन्स कैल्शियम ऑक्सलेट से बने होते हैं। जब मूत्र में कैल्शियम और ऑक्सलेट की मात्रा बढ़ जाती है, तो वे आपस में जुड़कर सख्त पथरी का रूप ले लेते हैं। इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए, डॉक्टर ने तीन ऐसे नियम बताएं हैं जो न सिर्फ नई पथरी बनने से रोकते हैं, बल्कि पहले से मौजूद स्टोन को बढ़ने से भी रोक सकते हैं। अगर इन तीन नियमों का सख्ती से पालन किया जाए तो किडनी स्टोन के जोखिम को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

हाइड्रेशन का नियम

तीसरी और सबसे महत्वपूर्ण बात है पर्याप्त जल सेवन। कई वैज्ञानिक शोधों से यह साबित हो चुका है कि जो व्यक्ति प्रतिदिन कम से कम 2.5 लीटर पानी पीता है, उनमें किडनी स्टोन बनने की संभावना बहुत कम हो जाती है। पानी यूरिन को पतला रखता है, जिससे पथरी बनाने वाले खनिज आपस में जमा होकर पत्थर नहीं बन पाते। अगर आपको पहले से पथरी है, तो पानी उसे बाहर निकालने में मदद करता है। क्योंकि पानी सिर्फ प्यास बुझाने के लिए ही नहीं बल्कि शरीर में कई फंक्शनिंग को बेहतर बनाने का भी काम करता है। लो मेटाबॉलिज्म से लेकर, अनिद्रा और सिरदर्द, ब्लड प्रेशर लेवल में बदलाव और भावनात्मक मिजाज तक को पानी प्रभावित करता है।

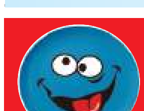

हंसना मना है

एक लड़की ने अपने बॉयफ्रेंड से पूछा, तुम्हें खुशी मिलती है जब मैं रोती हूं? उसने जवाब दिया, नहीं, मुझे उस वक्त खुशी मिलती है। जब तुम मुझे रोते हुए फोटो भेजती हो!

बेटा- 6 के बाद 7 पापा! बाप- शाबाश बेटा मेरा तो बहुत इंटेलीजेंट है उसके बाद! बेटा- 8, 9, 10, बाप- और उसके बाद? बेटा- और उसके बाद गुलाम, बेगम और बादशाह!

एक भिखारी को 100 का नोट मिला, वो फाइव स्टार होटेल में गया और भरपेट खाना खाया, 1500 रुपये का बिल आया, उसने मैनेजर से कहा, पैसे तो नहीं है, मैनेजर ने पुलिस के हवाले कर दिया, भिखारी ने पुलिस को 100 का नोट दिया, और छूट गया, इसे कहते हैं... फाइनेन्सियल मैनेजमेन्ट विदाउट एमबीए।

टीचर- एक टोकरी में 10 आम है , उसमें से 2 आम सड़ गए, बताओ कितने आम बचे? संजू- सर, 10 आम, टीचर- वो कैसे? संजू - सड़ने के बाद भी आम तो आम ही रहेगा ना, केले तो बन नहीं जायेंगे, आज संजू एक वकील है।

पत्रकार- 80 साल की उम्र में भी आप बीवी को डार्लिंग कहते हैं, इस प्यार का राज क्या है? बूढ़ा व्यक्ति- बेटे 20 साल पहले इनका नाम भूल गया था, पूछने की हिम्मत नहीं हुई, इसलिए डार्लिंग कहता हूं...

कहानी | कौवा और दुष्ट सांप

एक जंगल में पेड़ पर कौवे का एक जोड़ा रहा करता था। वो दोनों खुशी-खुशी उस पेड़ पर जीवन बसर कर रहे थे। एक दिन उसी पेड़ के नीचे बने बिल में सांप रहने लगा था। जब भी कौवों का जोड़ा दाना चुगने के लिए जाता, सांप उनके अंडों को खा जाता था, लेकिन उन्हें पता नहीं चल पा रहा था कि अंडे कौन ले जाता है। एक दिन कौवे का जोड़ा दाना चुग कर जल्दी आ गया, तो उन्होंने देखा की उनके अंडों को बिल में रहले वाला एक सांप खा रहा है। इसके बाद उन्होंने पेड़ पर किसी ऊंचे स्थान पर छुपकर अपना घोंसला बना लिया। सांप ने देखा कि कौवों का जोड़ा पहले वाले स्थान को छोड़कर चला गया है, लेकिन शाम होते ही दोनों वापस पेड़ पर आ जाते हैं। कौवा के अंडों में से बच्चे निकल आए और वो बड़े होने लगे। एक दिन सांप को उनके नए घोंसले का पता चल गया और जैसे कौवे घोंसला छोड़ कर गए, सांप उनके घोंसले की ओर बड़ने लगा, लेकिन किसी कारण से कौवों का जोड़ा वापस पेड़ की ओर लौटने लगा। उन्होंने दूर से ही सांप को उनके घोंसले की ओर जाता देख लिया और जल्दी से वहां पहुंच कर अपने बच्चों को पेड़ की ओट में छुपा दिया। सांप ने देखा की घोंसला खाली है, तो वह कौवों की चाल समझ गया। कौवे ने एक योजना बनाई। कौवा उड़कर जंगल के बाहर बने एक राज्य में चला गया। वहां एक सुंदर महल था। महल में राजकुमारी अपनी सहेलियों के साथ खेल रही थी। कौवा उसके गले में से मोतियों का हार लेकर उड़ गया। सभी ने शोर मचाया, तो पहरेदार हार लेने के लिए कौवे का पीछा करने लगे। कौवे ने जंगल में पहुंचकर हार को सांप के बिल में डाल दिया, जिसे पीछे कर रहे सैनिकों ने देख लिया। जैसे ही सैनिकों ने हार निकालने के लिए बिल में हाथ डाला, तो सांप फुंकारता हुआ बाहर निकल आया। सांप को देखकर सैनिकों ने तलवार से उस पर हमला कर दिया, जिससे सांप घायल हो गया और अपनी जान बचाकर वहां से भाग गया। सांप के जाने के बाद कौवा अपने परिवार के साथ खुशी-खुशी रहने लगा।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष – भागदौड़ अधिक रहेगी। वाणी में हल्के शब्दों के प्रयोग से बचें। मेहनत अधिक होगी। लाभ में कमी रह सकती है। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। आय बनी रहेगी।

वृषभ – मान-सम्मान मिलेगा। मेहनत का फल मिलेगा। कारोबार में वृद्धि के योग हैं। जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे। निवेश शुभ रहेगा। नौकरी में अधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

मिथुन – पुरानी संगी-साथियों से मुलाकात होगी। उत्साहवर्धक सूचना प्राप्त होगी। फालतू खर्च होगा। स्वास्थ्य कमजोर रह सकता है। आत्मसम्मान बना रहेगा।

कर्क – बेरोजगारी दूर करने के प्रयास सफल रहेंगे। भेंट व उपहार की प्राप्ति संभव है। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। शेयर मार्केट व म्युचुअल फंड से मनोनुकूल लाभ होगा।

सिंह – दुष्टजनों से सावधानी आवश्यक है। फालतू खर्च पर नियंत्रण नहीं रहेगा। हल्की मजाक करने से बचें। अपेक्षित काम में विलंब होगा। बेकार की बातों पर ध्यान न दें।

कन्या – यात्रा लाभदायक रहेगी। संतान पक्ष से बुरी खबर मिल सकती है। डूबी हुई रकम प्राप्त होगी। व्यापार-व्यवसाय से मनोनुकूल लाभ होगा। नौकरी में प्रशंसा मिलेगी।

तुला – सामाजिक कार्य करने में मन लगेगा। योजना फलीभूत होगी। कार्यस्थल पर परिवर्तन हो सकता है। कारोबार मनोनुकूल लाभ देगा। नौकरी में अधिकार बढ़ सकते हैं।

वृश्चिक – चोट व रोग से कष्ट हो सकता है। बेचैनी रहेगी। प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। पूजा-पाठ में मन लगेगा। सत्संग का लाभ मिलेगा। उत्साह रहेगा।

धनु – चोट व दुर्घटना से बड़ी हानि हो सकती है। पुराना रोग उभर सकता है। वाणी में हल्के शब्दों के प्रयोग से बचें। किसी व्यक्ति विशेष से कहासुनी हो सकती है।

मकर – यात्रा लाभदायक रहेगी। राजकीय सहयोग मिलेगा। सरकारी कामों में सहूलियत होगी। जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा। घर में सुख-शांति रहेंगे। झंझटों में न पड़ें।

कुम्भ – ऐश्वर्य के साधनों पर खर्च होगा। नौकरी में कार्य की प्रशंसा होगी। मातहतों का सहयोग प्राप्त होगा। स्थायी संपत्ति के कार्य बड़ा लाभ दे सकते हैं। विवेक से कार्य करें।

मीन – पार्टी व पिकनिक का कायक्रम बनेगा। आनंद के साथ समय व्यतीत होगा। मनपसंद व्यंजनों का लाभ मिलेगा। रचनात्मक कार्य सफल रहेंगे। व्यापार मनोनुकूल लाभ देगा।

हालीवुड | मन की बात

अर्चना पूरन सिंह ने फिल्म इंडस्ट्री में काम के घंटों को लेकर जतायी चिंता

फिल्म इंडस्ट्री में काम के घंटों को लेकर एक बहस जारी है। पिछले साल दीपिका पादुकोण ने आठ घंटे काम की शिफ्ट की मांग की थी। जिसके बाद उन्हें कुछ फिल्मों से भी हाथ धोना पड़ा और इस मांग ने एक बहस को भी जन्म दिया। कई लोगों ने इंडस्ट्री में लंबे काम के घंटों और बुनियादी सुविधाओं की कमी को लेकर चिंताएं जाहिर कीं। कई ने कलाकारों और क्रू दोनों के सामने आने वाली चुनौतियों को उजागर किया है। हाल ही में कॉमेडी ड्रामा सीरीज टोस्टर के कलाकारों, राजकुमार राव, सान्या मल्होत्रा, अभिषेक बनर्जी और अर्चना पूरन सिंह ने भी इसी तरह के मुद्दों पर बात की। अब अर्चना पूरन सिंह ने अधिक काम के घंटों को लेकर चिंता जताई है। अर्चना पूरन सिंह ने बढ़ते काम के घंटों के दबाव के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने समझाया कि कैसे शिफ्टें अक्सर निर्धारित समय से आगे बढ़ जाती हैं, कभी-कभी 12 घंटे से भी अधिक लंबी हो जाती हैं। इसका विशेष रूप से उन क्रू मेंबर्स पर बुरा असर पड़ता है, जो चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में लंबे समय तक शारीरिक रूप से कठिन काम में लगे रहते हैं। इसके बावजूद वे हमसे 13-14 घंटे काम करने और लंच ब्रेक न लेने की उम्मीद करते हैं। यह एक तरह की कंजूसी है। कंजूसी एक मानसिकता है। आप उन लाइटमैन को कैसे खाना नहीं खाने दे सकते जो घंटों धूप में खड़े रहते हैं? उनके पास हमारे जैसे असिस्टेंट नहीं हैं, जो उनके लिए फल लाएं। यह बहुत बुरा है। एक्ट्रेस ने यह भी कहा कि कैसे कुछ प्रोडक्शन हाउस खाने के मामले में बेहद सख्त होने के लिए बदनाम हो गए हैं। मेंबर्स अक्सर अनौपचारिक रूप से उन्हें खाने की सीमित मात्रा के आधार पर ही बुलाते हैं। ऐसी प्रथाएं इंडस्ट्री के भीतर एक गहरी, लंबे समय से चली आ रही समस्या को दिखाती हैं।

नई फिल्म में फरहान-रितेश संग बड़ा धमाल करेंगे सनी देओल

बॉलीवुड | मसाला

बॉलीवुड के एक्शन स्टार सनी देओल एक बार फिर बड़े पर्दे पर धमाका करने की तैयारी में है। इस बार वो एक अलग अंदाज में नजर आने वाले हैं। हाल ही में उनकी नई फिल्म की घोषणा हुई है, जिसने फैंस के बीच उत्साह और बढ़ा दिया है। एक्शन और थ्रिल से भरपूर इस फिल्म की शूटिंग 27 फरवरी 2026 से शुरू हो चुकी है और अभी इसकी शूटिंग जारी है। जैसे ही ये खबर सामने आई, सोशल मीडिया पर इसे लेकर चर्चाएं तेज हो गईं।

इस फिल्म में सनी देओल पहली बार रितेश सिधवानी और फरहान अख्तर के प्रोडक्शन हाउस एक्सेल एंटरटेनमेंट के साथ काम कर रहे हैं। इतना ही नहीं, साउथ के मशहूर फिल्ममेकर ए आर मुरुगादॉस भी इस प्रोजेक्ट से जुड़े हैं। फिल्म में साउथ एक्ट्रेस ज्योतिका भी अहम भूमिका निभा रही हैं। बताया जा रहा है कि ये एक हाई-ऑक्टेन एक्शन थ्रिलर होगी, जिसमें कहानी और किरदार दोनों ही अलग होंगे।

करीबी सूत्रों के मुताबिक, सनी देओल इस फिल्म में अपने पुराने इमेज से हटकर कुछ नया करने जा रहे हैं। वो एक ऐसे किरदार में नजर आएंगे, जो पहले कभी स्क्रीन पर नहीं देखा गया। इस फिल्म का निर्देशन बालाजी गणेश कर रहे हैं, जो लंबे समय तक ए आर मुरुगादॉस के साथ को-डायरेक्टर के रूप में काम कर चुके हैं। ये फिल्म उनके डायरेक्टोरियल डेब्यू के रूप में भी खास मानी जा रही है। कहानी में सस्पेंस, एक्शन और इमोशन का कॉम्बिनेशन भी देखने को मिलेगा, जो दर्शकों को बांधे रखने का वादा करता है। बता दें कि फिल्म एक्सेल एंटरटेनमेंट के बैनर तले बन रही है, जिसे रितेश सिधवानी, फरहान अख्तर और ए।आर। मुरुगादॉस मिलकर प्रोड्यूस कर रहे हैं। साथ ही कासिम जगमगिया, विशाल रामचंद्रनी, आदित्य जोशी, सुनील जैन और यूसुफ शेख इस प्रोजेक्ट के को-प्रोड्यूसर हैं। बॉर्डर 2 की सफलता के बाद सनी देओल का ये नया प्रोजेक्ट उनके करियर का एक और बड़ा कदम माना जा रहा है। ऐसे में फैंस को अब इस फिल्म के रिलीज होने का बेसब्री से इंतजार है।

आस्कर के फिल्म ओम शांति ओम का क्लिप शेयर करने पर गदगद हुए शाहरुख

शाहरुख खान इन दिनों बेहद खुश हैं। दरअसल ऑस्कर ने हाल ही में उनकी 2007 की फिल्म ओम शांति ओम का वीडियो क्लिप शेयर किया है, शुक्रवार रात को शाहरुख ने अपने फेसबुक हैंडल पर इस सम्मान पर रिएक्शन देते हुए एकेडमी को थैंक्यू कहा और ये भी कहा कि उन्हें सचमुच दुनिया का बादशाह होने का एहसास हो रहा है।

बता दें कि बॉलीवुड सुपरस्टार ने लिखा, ओम की स्पीच के जरिए पुरानी यादें ताजा करने के लिए द एकेडमी का थैंक्यू... अब मुझे सचमुच दुनिया का बादशाह होने का एहसास हो रहा है... हा हा...

बता दें कि हाल ही में एकेडमी ने अपने इंस्टाग्राम पर शाहरुख खान के ओम शांति ओम फिल्म के एक स्पीच का वीडियो शेयर किया। कैप्शन में उन्होंने लिखा, किस्मत के बारे में एक बात... वो चूकती नहीं। फिल्म: ओम शांति ओम (2007) निर्देशक: फराह खान, लेखक: फराह खान, मुश्ताक शेख और मयूर पुरी, कलाकार: शाहरुख खान, दीपिका पादुकोण, अर्जुन रामपाल, श्रेयस तलपड़े और किरण खेर।

नवंबर 2007 में रिलीज़ हुई 'ओम शांति ओम' से दीपिका पादुकोण ने बॉलीवुड में डेब्यू किया था। यह एक जूनियर फिल्म कलाकार (शाहरुख खान स्टारर किरदार) की कहानी है, जो एक फेमस एक्ट्रेस शांतिप्रिया (दीपिका द्वारा अभिनीत) को दिल दे बैठता है, लेकिन अपनी पसंदीदा अभिनेत्री को बचाने की कोशिश में उसकी हत्या कर दी जाती है। हालांकि, वह हत्यारों को सजा देने के लिए पुनर्जन्म लेता है। ये फिल्म बॉक्स ऑफिस पर सुपरहिट रही थी।

इस बीच, शाहरुख खान के वर्क फ्रंट की बात करें तो एक्टर को आखिरी बार 'जवान' फिल्म में देखा गया था, जिसके लिए उन्हें बेस्ट एक्टर का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिला था। उन्होंने ये अवॉर्ड विक्रांत मैसी के साथ शेयर किया था, जिन्हें फिल्म 12वीं फेल में उनके दमदार अभिनय के लिए सराहा गया था। वहीं शाहरुख खान की अपकमिंग फिल्म अब 'किंग' है सिद्धार्थ आनंद द्वारा निर्देशित इस फिल्म में सुहाना खान, दीपिका पादुकोण और अभय वर्मा भी महत्वपूर्ण भूमिकाओं में हैं।

अजब-गजब | मॉरिटानिया में मोटापन धन, समृद्धि का माना जाता है प्रतीक

इस देश में मोटी लड़कियों को 'हॉट' और आकर्षक कहा जाता है, जबकि दुबली-पतली लड़कियों को बदसूरत

दुनिया भर में खूबसूरती के मानक अलग-अलग हैं। जहां ज्यादातर देशों में पतली कमर और दुबला-पतला शरीर को आकर्षक माना जाता है, वहीं अफ्रीका के मॉरिटानिया में ठीक उल्टा है। यहां जितनी ज्यादा चर्बी, उतनी ज्यादा खूबसूरती। इस देश में मोटी लड़कियों को 'हॉट' और आकर्षक कहा जाता है, जबकि दुबली-पतली लड़कियों को बदसूरत समझा जाता है। इस संस्कृति में मां-बाप अपनी बेटियों को जबरदस्ती मोटा बनाने के लिए हजारों कैलोरी का खाना खिलाते हैं। हम बात कर रहे हैं मॉरिटानिया देश की, जहां मोटापा को खूबसूरती का पैमाना माना जाता है।

'लेब्लौह' या 'गेवाज'। लेब्लौह प्रथा मुख्य रूप से मॉरिटानिया के ग्रामीण इलाकों में प्रचलित है। यहां पांच से उन्नीस साल की लड़कियों को खास 'मोटा बनाने वाले फार्म' या घर पर ही जबरन खाना खिलाया जाता है। कैमल मिल्क, कूसकूस, पीनट ऑयल, मक्खन और शुद्ध जानवरों की चर्बी से बने भोजन से एक दिन में 10,000 से 16,000 कैलोरी तक खिलाई जाती है। यह सामान्य व्यक्ति की जरूरत से चार गुना ज्यादा है। मां या बड़ी महिलाएं लड़कियों को खाना खिलाने के लिए

मारपीट, पैरों के बीच लकड़ी दबाना, उल्टी करवाना या अन्य यातनाएं देती हैं अगर वे खाने से मना कर दे तो।

मॉरिटानिया की पारंपरिक मूर समाज में मोटापन धन, समृद्धि और सामाजिक स्थिति का प्रतीक माना जाता है। माना जाता है कि अगर पत्नी मोटी है तो इसका मतलब है कि पति उसे अच्छा खिला-पिला सकता है। पतली महिला को गरीबी या पति की असमर्थता का संकेत समझा जाता है। इसलिए लड़कियों को कम उम्र में ही मोटा बनाकर शादी के योग्य बनाया जाता है। स्थानीय कहावत भी यही कहती है कि पत्नी अपने पति के दिल में उतनी जगह घेरती है, जितनी जगह वह उसके बिस्तर पर घेरती है। इस प्रथा की वजह से कई लड़कियों की जल्दी शादी कर दी जाती है क्योंकि मोटा शरीर उन्हें उम्र से ज्यादा परिपक्व दिखाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में 75 प्रतिशत तक महिलाओं ने इस प्रथा का सामना किया है, जबकि शहरों में यह कम होकर 10-25 प्रतिशत रह गया है। लेब्लौह के कारण लड़कियों को गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं होती है। मोटापा बढ़ने से डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर, हार्ट डिजीज, जोड़ों के दर्द और सांस की बीमारियां आम हो जाती है। कुछ मामलों में लड़कियों को जानवरों को मोटा करने वाली केमिकल्स भी खिलाई जाती हैं, जो और ज्यादा खतरनाक है। कई लड़कियां मानसिक यातना भी झेलती हैं क्योंकि उन्हें जबरन खाना पड़ता है और पतले होने पर परिवार को शर्मिंदगी महसूस होती है। संयुक्त राष्ट्र और महिला अधिकार कार्यकर्ता इस प्रथा के खिलाफ लगातार आवाज उठा रहे हैं। कुछ मांएं इसे प्यार का रूप बताती हैं क्योंकि वे चाहती हैं कि उनकी बेटी अच्छी शादी करे और सम्मान पाए। लेकिन युवा पीढ़ी और शहरों में शिक्षा बढ़ने के साथ यह प्रथा कम हो रही है।

भारत की जादुई ट्रेन, करती है 88 स्टॉपेज और 9 राज्यों का सफर तय

भारत में रोजाना चलने वाली सबसे लंबी रेल यात्राओं में से एक मानी जाने वाली Avadh Assam E&press अपने अनोखे सफर के लिए जानी जाती है। ट्रेन नंबर 15909/15910 के साथ चलने वाली यह एक्सप्रेस असम के Dibrugarh से निकलकर राजस्थान के Lalgarh तक जाती है। इस दौरान यह करीब 3100 किलोमीटर से भी ज्यादा दूरी तय करती है और पूरे रास्ते में 88 स्टेशनों पर रुकती है, जो इसे बाकी ट्रेनों से अलग बनाता है। यह लंबा सफर इतना बड़ा है कि ट्रेन को अपने अंतिम स्टेशन तक पहुंचने में करीब चार दिन लग जाते हैं। इसी वजह से इसके संचालन के लिए कुल सात ट्रेन सेट लगाए जाते हैं। दोनों दिशाओं में तीन-तीन ट्रेनें लगातार चलती हैं, जबकि एक सेट अतिरिक्त रखा जाता है, ताकि सेवा बिना रुके जारी रह सके।

इस ट्रेन की खासियत सिर्फ दूरी या समय नहीं, बल्कि इसका रूट भी है। Avadh Assam E&press कुल 9 राज्यों से होकर गुजरती है। असम, नागालैंड, पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब और राजस्थान। इतने बड़े हिस्से को जोड़ने वाली यह ट्रेन देश के अलग-अलग संस्कृतियों और इलाकों को एक धागे में पिरोती है। इसके 88 स्टॉपेज भी इसे खास बनाते हैं। हर स्टेशन पर ट्रेन आमतौर पर 2 से 5 मिनट तक रुकती है। अगर कुल समय जोड़ा जाए, तो सफर के दौरान लगभग साढ़े चार घंटे से ज्यादा समय सिर्फ स्टेशनों पर रुकने में ही निकल जाता है। यही वजह है कि Avadh Assam E&press को अक्सर 'जादुई ट्रेन' कहा जाता है। क्योंकि इसका सफर सिर्फ दूरी तय करना नहीं, बल्कि पूरे भारत को एक साथ जोड़ने का अनुभव देता है।

पीएम को नियंत्रित कर रहे हैं ट्रंप

नेता प्रतिपक्ष का भाजपा पर प्रहार

» राहुल गांधी बोले- विपक्ष का सामना भी नहीं कर सके मोदी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने पीएम मोदी पर एकबार फिर करारा प्रहार किया। उन्होंने उप पर डोनाल्ड ट्रंप द्वारा नियंत्रित होने का गंभीर आरोप लगाया है, दावा किया कि एप्स्टीन फाइलों के जरिए अमेरिका मोदी को नियंत्रित कर रहा है और इसी तर्ज पर वह अन्नाद्रमुक के माध्यम से तमिलनाडु को नियंत्रित करना चाहते हैं। कांग्रेस नेता और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा 'नियंत्रित' किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री चाहते हैं कि अन्नाद्रमुक सत्ता में आए, ताकि वह तमिलनाडु के मुख्यमंत्री को नियंत्रित कर सकें।

गांधी ने दावा किया कि प्रधानमंत्री ने हमारी ऊर्जा सुरक्षा को दांव पर लगा दिया और हमारे डेटा को दूसरों के हवाले कर दिया, साथ ही हमारे किसानों और छोटे और मध्यम उद्योगों को बेच दिया। उन्होंने परिसीमन विधेयक पर कहा, कल (संसद में) आपने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के चेहरे पर आत्मविश्वास की पूरी कमी देखी। राहुल गांधी ने यहां एक चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए कहा, वह (प्रधानमंत्री) विपक्ष का सामना भी नहीं कर सके। वह अलग बैठे थे। इसका कारण यह है कि वह अमेरिका द्वारा नियंत्रित हैं। उन्होंने भारत-अमेरिका समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसने हमारे देश को बेच दिया।'' उन्होंने कहा, आज अगर डोनाल्ड ट्रंप मोदी को कूदने को कहें, तो मोदी कूद जाते हैं। अगर डोनाल्ड ट्रंप मोदी को लेटने को कहें, तो मोदी लेट जाते हैं। क्यों? क्योंकि डोनाल्ड ट्रंप का मोदी पर पूरी तरह नियंत्रण है। वे उन्हें कैसे नियंत्रित करते हैं? वह एप्स्टीन फाइलों के जरिए नियंत्रित करते हैं। वह उन्हें नियंत्रित करते हैं, क्योंकि उन्हें मोदी की वित्तीय व्यवस्था का पता है और वह अदाणी के साथ मोदी के संबंधों को समझते हैं। राहुल गांधी ने कहा, जिस तरह ट्रंप, मोदी को नियंत्रित कर रहे हैं, वह भी तमिलनाडु के मुख्यमंत्री को उसी तरह नियंत्रित करना चाहते हैं।

अन्नाद्रमुक को सत्ता में लाना चाहते हैं पीएम मोदी

उन्होंने कहा, इसीलिए वह (मोदी) तमिलनाडु में ऑल इंडिया अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कषगम (अन्नाद्रमुक)को सत्ता में लाना चाहते हैं।'' केंद्र सरकार ने नवीनतम जेफरी एपस्टीन केस फाइलों में प्रधानमंत्री मोदी के संदर्भों को खारिज कर दिया था। सरकार ने इन्हें एक सजायाफ्ता अपराधी के घटिया विचार के रूप में वर्णित करते हुए कहा कि यह अत्यधिक तिरस्कार के साथ खारिज किए जाने के योग्य है।

राहुल गांधी को बड़ी राहत दोहरी नागरिकता केस में एफआईआर के आदेश पर रोक

लखनऊ। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने राहुल गांधी के खिलाफ कथित दोहरी नागरिकता मामले में एफआईआर दर्ज करने के अपने पूर्व निर्देश पर रोक लगा दी। न्यायालय ने यह भी कहा कि आरोपी की सुनवाई के बिना कोई निर्णय नहीं लिया जा सकता। एक दिन पहले, उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ ने उत्तर प्रदेश पुलिस को कांग्रेस सांसद के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने का निर्देश दिया था, जिसमें आरोप लगाया गया था कि उन्होंने 2003 में इंग्लैंड में एक कंपनी का गठन करते समय ब्रिटिश नागरिकता छिपाई थी। न्यायमूर्ति सुभाष विद्यार्थी की पीठ ने राज्य सरकार को जांच किसी केंद्रीय एजेंसी को सौंपने की अनुमति भी दी थी। पीठ ने कहा कि आरोपों के प्रथम दृष्टया अध्ययन से संज्ञेय अपराध प्रतीत होते हैं, जिनके लिए विस्तृत जांच आवश्यक है। यह निर्देश उप सॉलिसिटर जनरल द्वारा अदालत के अनुरोध पर प्रासंगिक दस्तावेज प्रस्तुत करने के बाद आया। यह याचिका कर्नाटक भाजपा कार्यकर्ता विग्नेश शिशिर ने दायर की थी, जिन्होंने आरोप लगाया था कि राहुल ने अगस्त 2003 में पंजीकृत कंपनी, मेसर्स बैकॉप्स लिमिटेड, के गठन के दौरान स्वयं को ब्रिटेन का नागरिक घोषित किया था। याचिकाकर्ता के अनुसार, राहुल ने स्वेच्छा से अपनी राष्ट्रीयता ब्रिटिश बताई थी और लंदन और हैम्पशायर के पते के साथ एक निदेशक पहचान पत्र भी प्रदान किया था। अपने पूर्व आदेश में, पीठ ने लखनऊ की एक विशेष सांसद/विधायक अदालत के 28 जनवरी, 25 के उस फैसले को रद्द कर दिया था, जिसमें एफआईआर दर्ज करने का आदेश देने से इनकार कर दिया गया था। न्यायालय ने पाया कि निचली अदालत आरोपों की पर्याप्त रूप से जांच करने में विफल रही कि क्या प्रथम दृष्टया संज्ञेय अपराध बनते हैं।

जाति के आगे पार्टी कुछ नहीं : गोपाल भार्गव

» मप्र में बीजेपी विधायक के बयान से सियासी हलचल तेज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भोपाल। मध्य प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता और पूर्व मंत्री गोपाल भार्गव ने जाति को लेकर ऐसा बयान दिया है जो चर्चा में आ गया है। सागर में परशुराम जयंती के मौके पर आयोजित कार्यक्रम में भार्गव ने कहा कि जाति के सामने पार्टी कुछ नहीं होती, जो हैसियत आजादी से पहले ब्राह्मणों की थी अब वो अब नहीं रही। गोपाल भार्गव रहली विधानसभा से 9 बार के विधायक है और नेता प्रतिपक्ष व मंत्री भी रह चुके हैं। जाति को लेकर उन्होंने जो बयान दिया अब वो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

बीजेपी नेता ने कहा कि आज के वक्त में हम यह नहीं कहते हैं कि आजादी बंदूक की नली से निकलती है क्योंकि हम आजाद हैं. लेकिन नौकरी, रोजगार, संपन्नता ये सब आपके वोट से निकलता है इसलिए सारे हमारे बंधुओं के लिए एकजुट होना जरूरी है। बीजेपी नेता ने कहा कि मैंने अनेकों समाजों के बारे में देखा है कि खूब पार्टियों में बड़े पदों पर रहेंगे। लेकिन, जब उनकी जाति का आदमी खड़ा होगा। समाज का आदमी खड़ा होगा तो वह कितना ही निष्ठावान क्यों न हो अपनी पार्टी के व्यक्ति की तरफ ही जाएगा। भले ही वह खुलकर प्रचार ना करे, लेकिन अंदर-अंदर प्रचार करके उसको जिताने का काम करेगा। जाति के सामने फिर पार्टी कुछ नहीं रह जाती, जो स्थिति भारत में आजादी के बाद ब्राह्मणों की थी, 1947 में जो हैसियत थी अब वो नहीं रही। उन्होंने कहा कि इस बात से यह नहीं लगना चाहिए कि हम कोई वर्ग संघर्ष की बात कर रहे हैं, हम अपने जीवन को ऊंचा उठाने के प्रति संघर्ष की बात कर रहे हैं। हमें अच्छे से रहने का अधिकार मिले, हमें दो समय के भोजन की व्यवस्था हो जाए, हमारे बच्चे ठीक से पढ़ने जाएं. बीमार हों तो ठीक से इलाज हो जाए। जो भी जीवन की तमाम आवश्यकताएं होती हैं वह मिलें। इस बात की चर्चा अपने समाज में जाकर नहीं करेंगे तो और कहां करेंगे।

भाजपा बंगाल में डर का माहौल बना रही : ममता बनर्जी

» सीएम बोलीं- लोकतांत्रिक तरीके से भाजपा को परास्त करेगी टीएमसी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि भाजपा बंगाल में डर का माहौल बनाने के लिए युद्ध की गाड़ियां लेकर आई है, लेकिन बंगाल की जनता किसी भी कीमत पर डरने वाली नहीं है। उन्होंने स्पष्ट किया कि वे इस लड़ाई को लोकतांत्रिक तरीके से लड़ेंगी और भाजपा को परास्त करेंगी। ममता बनर्जी ने भाजपा पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि वे प्रवासी श्रमिकों की भावनाओं का गलत इस्तेमाल कर रहे हैं।

उन्होंने दावा किया कि मजदूरों को गीता और अन्य धर्मग्रंथों की कसम खिलवाई जा रही है ताकि वे भाजपा के पक्ष में मतदान करें। मुख्यमंत्री ने इसे राजनीति का अब तक का सबसे गिरता हुआ स्तर करार दिया। उन्होंने सवाल उठाया कि यदि बिल 23 में ही पारित हो गया था, तो उसे अब तक प्रभावी ढंग से लागू क्यों नहीं किया गया? उन्होंने कहा कि भाजपा महिलाओं के सम्मान की बात तो करती है, लेकिन उनकी मंशा में खोट है। महिला आरक्षण बिल पर चर्चा करते हुए ममता बनर्जी ने पीएम मोदी पर सीधा हमला बोला। उन्होंने कहा, पिछले शुक्रवार को लोकसभा में बिल के मामले में सरकार को मुंह की खानी पड़ी है। मुख्यमंत्री ने तंज कसा कि अब अपनी हार और खराब छवि को छिपाने के लिए प्रधानमंत्री रोने का नाटक कर रहे हैं।

भाजपा की बी-टीम के आरोप बकवासः ओवैसी

» एआईएमआईएम प्रमुख ने कांग्रेस को घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने मौलाना आजाद की किताब का हवाला देते हुए भारत के विभाजन के लिए कांग्रेस को जिम्मेदार ठहराया और भाजपा की बी-टीम होने के आरोपों को खारिज किया। उन्होंने पश्चिम बंगाल में केवल 11 सीटों पर चुनाव लड़ने का बचाव करते हुए कांग्रेस और टीएमसी को बाकी सीटों पर भाजपा को हराने की चुनौती दी। ओवैसी ने रविवार को कहा कि 1947 के विभाजन के लिए कांग्रेस भी जिम्मेदार थी, और मुसलमानों को इसके लिए जिम्मेदार ठहराना गलत है।

गुजरात के लिंबायत में एक रैली को संबोधित करते हुए, ओवैसी ने मौलाना अबुल कलाम (देश के पहले शिक्षा मंत्री) आजाद की पुस्तक इंडिया विन्स फ्रीडम का हवाला देते हुए कहा कि आजाद ने महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू से देश के विभाजन को रोकने की अपील की थी। ओवैसी ने एआईएमआईएम को संवैधानिक सीमाओं के भीतर भाजपा को चुनौती देने में सक्षम पार्टी के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि अगर कोई भाजपा को रोक सकता है और संविधान की सीमाओं के भीतर रहकर, उनकी आंखों में आंखें डालकर उन्हें हमारे अधिकारों को स्वीकार करने के लिए मजबूर कर सकता है, तो वह पार्टी एआईएमआईएम है... यह समय है खड़े होने और अपने अधिकारों का दावा करने का। इससे पहले, आसनसोल में एक रैली में, ओवैसी ने टीएमसी और ममता को निशाना बनाते हुए उन्हें राज्य में भाजपा के उदय के लिए जिम्मेदार ठहराया।

विभाजन के लिए मुसलमान जिम्मेदार नहीं थे

ओवैसी ने कहा कि विभाजन के लिए मुसलमान जिम्मेदार नहीं थे। क्या कांग्रेस पार्टी विभाजन के लिए जिम्मेदार लोगों में शामिल नहीं है? अपनी पुस्तक इंडिया विन्स फ्रीडम में मौलाना आजाद लिखते हैं कि वे गांधी और नेहरू के पास गए और उनसे भारत को विभाजित न होने देने की अपील की। ओवैसी ने ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) को बंगाल में भाजपा की बी टीम कहने के लिए कांग्रेस और ऑल इंडिया तृणमूल कांग्रेस की आलोचना की और अपनी पार्टी द्वारा 11 सीटों पर चुनाव लड़ने को लेकर हो रही आलोचना पर आपत्ति जताई। उन्होंने कहा कि कुछ लोग आरोप लगाते हैं कि जब ओवैसी चुनाव लड़ते हैं, तो भाजपा को फायदा होता है।

केकेआर ने आरआर को हराकर चखा जीत का स्वाद

» रिंकू-अनुकूल ने राजस्थान रायल्स के मुंह से छीनी जीत, सातवें विकेट के लिए की सबसे बड़ी साझेदारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। केकेआर ने राजस्थान रॉयल्स को चार विकेट से हराकर आईपीएल 2026 में अपनी पहली जीत दर्ज की। केकेआर के लिए मौजूदा सीजन अच्छा नहीं रहा है, लेकिन रिंकू सिंह और अनुकूल रॉय ने सातवें विकेट के लिए दमदार साझेदारी कर केकेआर के लिए जीत का खाता खोला। राजस्थान ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में नौ विकेट पर 155 रन बनाए। जवाब में केकेआर ने 19.4 ओवर में छह विकेट पर 161 रन बनाकर मैच अपने नाम किया।

लक्ष्य का पीछा करते हुए केकेआर की बल्लेबाजी बेहद खराब रही और टीम ने 85 रन के स्कोर पर छह विकेट गंवा दिए थे। केकेआर को दोनों सलामी बल्लेबाज खाता तक नहीं खोल सके। छह विकेट गिरने के बाद रिंकू सिंह ने अनुकूल रॉय के साथ मिलकर सातवें विकेट के लिए 37 गेंदों पर 76 रनों की अविजित साझेदारी की। यह आईपीएल में सफल रन चेज में सातवें या इससे निचले क्रम के लिए दूसरी सबसे बड़ी साझेदारी है। इस मामले में शीर्ष पर एबी डिविलिरयर्स और इकबाल अब्दुल्लाह की जोड़ी है जिन्होंने 2016 में आरसीबी के लिए खेलते हुए गुजरात लायंस के खिलाफ 91 रनों की अविजित साझेदारी की थी। इससे पहले राजस्थान को वैभव सूर्यवंशी और यशस्वी जायसवाल ने अच्छी शुरुआत दिलाई। जबकि उनके अलावा अन्य कोई बल्लेबाज बड़ी पारी नहीं खेल सका। वैभव ने 46 रन बनाए, जबकि यशस्वी 39 रन बनाकर आउट हुए। इन दोनों के अलावा शिमरॉन हेत्मायर (12) और रियान पराग (12) की दहाई अंक तक पहुंच सके।

पंजाब की लखनऊ पर 54 रनों से आसान जीत

न्यू चंडीगढ़। प्रियांश आर्या (93) और कूपर कोनोली (87) की रिकॉर्ड 182 रनों की साझेदारी के बाद मार्को यानसेन की घातक गेंदबाजी के दम पर पंजाब किंग्स ने लखनऊ सुपर जाएंट्स को 54 रनों से हरा दिया। न्यू चंडीगढ़ में खेले गए मुकाबले में टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी पंजाब ने 20 ओवर में सात विकेट पर 254 रन बनाए। जवाब में लखनऊ की टीम निर्धारित ओवरों में पांच विकेट पर सिर्फ 200 रन ही बना सकी। पंजाब ने की इस सीजन की लगातार पांचवीं जीत है। 11 अंक के साथ टीम अंक तालिका में शीर्ष पर बरकरार है। वहीं, लखनऊ की टीम लगातार तीसरी हार के साथ आठवें स्थान पर है। पंजाब किंग्स ने लखनऊ सुपर जाएंट्स के खिलाफ मुकाबले में पंजाब ने 254/7 का स्कोर बनाया। यह इस सीजन में किसी भी टीम के द्वारा बनाया गया सर्वोच्च स्कोर है। इससे पहले आरसीबी ने तीन विकेट पर 250 बनाए थे। एडेन मार्करम काफी महंगे साबित हुए। उन्होंने सिर्फ एक ओवर गेंदबाजी की और 32 रन लुटाए। इसी के साथ वह आईपीएल इतिहास में लखनऊ की तरफ से सबसे महंगा ओवर डालने वाले गेंदबाज बन गए।

देश से झूठ बोलना बंद करें पीएम : खरगे

कांग्रेस अध्यक्ष ने भाजपा को घेरा, बोले- राजनीतिक लाभ के लिए महिलाओं के आरक्षण के उपाय के रूप में गलत तरीके से पेश किया जा रहा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। शुक्रवार को लोकसभा में महिला आरक्षण विधेयक की हार के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विपक्ष पर कन्या भ्रूण हत्या का आरोप लगाया, जिसके बाद कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने प्रधानमंत्री पर पलटवार करते हुए उन्हें हताश बताया। खरगे ने साफ तौर पर कहा कि इसे राजनीतिक लाभ के लिए महिलाओं के आरक्षण के उपाय के रूप में गलत तरीके से पेश किया जा रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि यह महिलाओं का सशक्तिकरण नहीं है।

खरगे ने कहा कि पिछले 12 वर्षों में कुछ भी सार्थक न कर पाने वाले हताश और निराश प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्र के नाम अपने आधिकारिक संबोधन को कीचड़ उछालने और सरासर झूठ से भरे राजनीतिक भाषण में बदल दिया। आचार संहिता पहले से ही लागू है और यह स्पष्ट था कि प्रधानमंत्री मोदी ने अपने विरोधियों पर हमला करने के लिए सरकारी तंत्र का दुरुपयोग कैसे किया। यह लोकतंत्र और भारत के संविधान का घोर अपमान है।उन्होंने कहा कि मोदी जी ने कांग्रेस का 59 बार जिक्र किया और महिलाओं का केवल कुछ ही बार। इससे देश को उनकी प्राथमिकताओं के बारे में सब कुछ पता चल जाता है। महिलाएं भाजपा की प्राथमिकता नहीं हैं। कांग्रेस है, क्योंकि कांग्रेस इतिहास के सही पक्ष में खड़ी है। कांग्रेस ने हमेशा महिला आरक्षण का समर्थन किया है। हम वह पार्टी थे जिसने 2010 में राज्यसभा में महिला आरक्षण विधेयक पारित कराया ताकि वह निरस्त न हो जाए। भाजपा उस विधेयक को लोकसभा में पारित नहीं करा सकी। उन्होंने 23 में एक और विधेयक लाया और कांग्रेस पार्टी ने उसका भी समर्थन किया।

खरगे ने कहा कि वह विधेयक अभी भी लागू है। दरअसल, इसे 16 अप्रैल को अधिसूचित किया गया था, जब लोकसभा परिसीमन संबंधी संवैधानिक संशोधन विधेयकों पर चर्चा कर रही थी। यह कार्य उसी प्रधानमंत्री द्वारा किया गया था। भाजपा को अपना विधेयक अधिसूचित करने में तीन साल लग जाना, भारत की नारी शक्ति के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है! उन्होंने कहा कि मोदी जी को देश से झूठ बोलना बंद करना चाहिए — उन्हें 2023 के कानून के तहत मौजूदा 543 लोकसभा सीटों में महिलाओं के लिए 33त्न आरक्षण लागू करना चाहिए। महिलाओं को उनका उचित प्रतिनिधित्व अभी न दें।

नेता प्रतिपक्ष ने की मणिपुर में तनाव को लेकर भाजपा सरकार की कड़ी आलोचना

लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने सोमवार को मणिपुर में तनाव को लेकर भाजपा सरकार की कड़ी आलोचना की और आरोप लगाया कि उन्होंने ही आग लगाई है। उन्होंने सत्तारूढ़ दल को मैतेई और कुकी समुदायों के बीच संघर्ष के लिए जिम्मेदार ठहराया। कोलाचेल में एक रैली को संबोधित करते हुए राहुल गांधी ने कहा कि मणिपुर में जो हुआ उसे देखिए। एक शांतिपूर्ण राज्य। उन्होंने आग लगा दी और सैकड़ों लोग मारे गए। वहां अभी भी गृहयुद्ध जारी है। राहुल गांधी की ये टिप्पणी मणिपुर में नए सिरे से तनाव के बाद आई है, जो ट्रोंगलाओबी अवांग लेइकाई में एक आतंकवादी हमले में 5 वर्षीय लड़के और उसकी 5 महीने की बहन की मौत के बाद पैदा हुआ है। इस घटना से व्यापक आक्रोश फैल गया है, प्रदर्शनकारियों ने प्रमुख सड़कों को अवरुद्ध कर दिया है और कुछ क्षेत्रों में हिंसा की खबरें भी आई हैं। सुरक्षा बलों ने भीड़ को तितर-बितर करने के लिए आंसू गैस और स्मोक बमों का इस्तेमाल किया है। राहुल गांधी ने मणिपुर की स्थिति को भाजपा के सत्ता पर कब्जा करने और दिल्ली से राज्यों को चलाने के इरादे से जोड़ा और आरोप लगाया कि इसी तरह की रणनीति का इस्तेमाल तमिलनाडु में एआईएडीएमके को नियंत्रित करने के लिए भी किया जा रहा है।

कश्मीर के उधमपुर में भीषण सड़क हादसा

यात्रियों से भरी बस पलटी, 18 की मौत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के उधमपुर जिले में सोमवार को एक दर्दनाक सड़क हादसा हुआ। रामनगर-उधमपुर हाईवे पर काघोते के पास एक यात्री बस अनियंत्रित होकर पलट गई, जिससे कम से कम 18 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। इस घटना में कई अन्य यात्री गंभीर रूप से घायल हुए हैं। हादसे की सूचना मिलते ही स्थानीय प्रशासन और बचाव टीमें मौके पर पहुंच गईं।

हालांकि, मलबे और बस की स्थिति को देखते हुए मरने वालों की संख्या बढ़ने की आशंका जताई जा रही है। पुलिस ने बताया कि सोमवार को जम्मू-कश्मीर में काघोते के पास रामनगर-ऊधमपुर हाईवे पर एक यात्री बस पलटने से कई लोगों की जान चली गई। इस घटना में कई अन्य लोग भी घायल हुए हैं, जिन्हें पास के अस्पतालों में भर्ती कराया गया है; बचाव अभियान के लिए अधिकारी भी मौके पर पहुँच गए हैं। हालाँकि, मरने वालों की संख्या बढ़ने की आशंका है, क्योंकि बचाव अभियान अभी भी जारी है। स्थानीय लोगों से मिली शुरुआती जानकारी के अनुसार, बस चालक ने बस से नियंत्रण खो दिया और काघोते के पास बस सड़क से फिसलकर पलट गई। स्थानीय लोगों का कहना है कि बस बहुत तेज़ रफ़्तार से चल रही थी, जिसके कारण यह दुर्घटना हुई।

बचाव अभियान के लिए वरिष्ठ अधिकारी मौके पर पहुँच गए हैं, और उप-विभागीय मजिस्ट्रेट (स्ष्ठरू) ने इस घटना का संज्ञान लेते हुए अधिकारियों को निर्देश दिया है कि घायलों को जल्द से जल्द इलाज मुहैया कराया जाए। ऊधमपुर के सरकारी मेडिकल कॉलेज में भी टीमों को अलर्ट कर दिया गया है। इस दुखद घटना ने एक बार फिर पहाड़ी रास्तों पर वाहनों की रफ्तार और सुरक्षा मानकों पर सवाल खड़े कर दिए हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि इस हाईवे पर मोड़ और ढलान के बावजूद बसों की ओवरस्पीडिंग आम बात है, जो अक्सर ऐसी बड़ी दुर्घटनाओं का कारण बनती है। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और बस के कागजात व तकनीकी पहलुओं की जांच की जा रही है ताकि हादसे के सटीक कारणों का पता लगाया जा सके।

तमिलनाडु में में पटाखा फैक्ट्री में भीषण धमाका, 20 मरे

तमिलनाडु के विरुधुनगर जिले के कट्टानारपट्टी गांव में स्थित एक पटाखा निर्माण इकाई में जोरदार धमाका हुआ। यह विस्फोट इतना शक्तिशाली था कि इसने आसपास की चार अन्य पटाखा इकाइयों को भी अपनी चपेट में ले लिया। इस दुखद घटना में 20 लोगों की जान चली गई है, जबकि 6 अन्य लोग गंभीर रूप से घायल हुए हैं, जिनका इलाज जारी है। घटना की जानकारी मिलते ही तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर दुख व्यक्त किया। उन्होंने कहा, %विरुधुनगर जिले के कट्टानारपट्टी में पटाखा फैक्ट्री में हुए धमाके में कई लोगों की मौत की खबर से मुझे गहरा दुख हुआ है। पीड़ित परिवारों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं हैं। म मुख्यमंत्री ने राहत और बचाव कार्यों को लेकर निर्देश दिए हैं। उन्होंने राज्य के मंत्रियों रामचंद्रन और थंगम थेन्नारासु को तुरंत घटनास्थल पर पहुंचकर बचाव कार्यों की निगरानी करने और प्रभावित परिवारों को सांत्वना देने के लिए कहा है।

सुप्रिया सुले ने राहुल गांधी की तारीफ की

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। एनसीपी (एसपी) सांसद सुप्रिया सुले ने लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी की तारीफ की। सोमवार को उन्होंने राहुल गांधी का समर्थन करते हुए कहा कि उन्हें किसी भी जांच एजेंसी से डर नहीं लगता,अगर ईमानदारी के लिए ओलंपिक में कोई पदक होता तो राहुल गांधी निस्संदेह उसे जीतते।

महिला आरक्षण पर सुप्रिया सुल ने कहा कि यह महिलाओं के आरक्षण का बिल नहीं था बल्कि यह परिसीमनसे जुड़ा था। महिला आरक्षण विधेयक तो पहले ही 2003 में पारित हो चुका है। भारत के राष्ट्रपति द्वारा भी इसे अधिसूचित किया जा चुका है।

भूकंप से जापान में कांपी धरती, 7.4 तीव्रता के झटके किए गए महसूस

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। जापान के उत्तरी हिस्से में सोमवार को 7.4 मैग्नीट्यूड के भूकंप के झटके महसूस किए गए। भूकंप के बाद तटीय इलाकों के लिए तुरंत सुनामी की चेतावनी जारी कर दी गई। अधिकारियों ने बताया कि इवाते प्रीफेक्चर और होक्काइडो के कुछ हिस्सों में समुद्र की लहरें करीब 3 मीटर तक ऊंची उठ सकती हैं।

लोगों से कहा गया है कि वे तुरंत सुरक्षित और ऊंची जगहों पर चले जाएं। सरकार और आपातकालीन सेवाएं पूरी तरह अलर्ट मोड पर हैं, स्थिति पर लगातार नजर रखी जा रही है। प्रशासन यह भी समझने की कोशिश कर रहा है कि भूकंप और सुनामी से कितना नुकसान हो सकता है। जारी चेतावनी में यह भी कहा गया है कि सुनामी की लहरें तट के पास पहुंचनी शुरू हो चुकी हैं और ये एक बार नहीं, बल्कि कई बार आ सकती हैं। एडवाइजरी में कहा गया है कि लोगों को बिना समय गंवाए, वहां से हट जाना चाहिए । अधिकारियों ने यह भी बताया कि लहरें तय समय से पहले या बाद में आ सकती हैं और उनकी ऊंचाई अनुमान से ज्यादा भी हो सकती है।

जदयू विधायक दल के नेता अभी तय नहीं

» बैठक में नीतीश कुमार बोले- आपलोग चिंता मत कीजिए

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

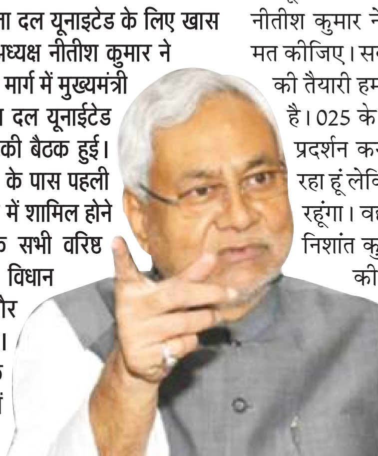

पटना। आज जनता दल यूनाइटेड के लिए खास दिन है। राष्ट्रीय अध्यक्ष नीतीश कुमार ने नेतृत्व में एक अणे मार्ग में मुख्यमंत्री आवास पर जनता दल यूनाईटेड के विधायक दल की बैठक हुई। नई सरकार बनने के पास पहली बार हुई इस बैठक में शामिल होने के लिए जदयू के सभी वरिष्ठ नेता, विधायक, विधान परिषद् सदस्य और पदाधिकारी पहुंचे। 82 मिनट तक चली इस बैठक में विधायक दल के नेता पर फैसला नहीं हो पाया।

संभावना है कि विजय चौधरी को विधायक दल का नेता चुना जाए। इधर, जदयू विधायकों को संबोधित रखते हुए नीतीश कुमार ने कहा कि आप लोग चिंता मत कीजिए। सबकुछ ठीक है। अगले चुनाव की तैयारी हमलोगो को अभी से ही करनी है। 025 के चुनाव से भी अधिक बेहतर प्रदर्शन करना है। मैं भले ही दिल्ली जा रहा हूं लेकिन आप सबके बीच अधिक रहूंगा। वहीं जदयू के वरिष्ठ नेताओं ने निशांत कुमार को बड़ी जिम्मेदारी देने की मांग उठी। हालांकि निशांत इस बैठक में नहीं आए थे। जदयू नेताओं ने कहा कि निशांत जल्द ही बिहार भ्रमण पर निकलेंगे। वह जल्द ही बड़ी भूमिका में नजर आ सकते हैं। इधर, बैठक से पहले जदयू के पूर्व मंत्री महेश्वर हजारी ने कहा कि यह बैठक दल को मजबूत करने और संगठनात्मक मजबूती पर चर्चा के लिए बुलाई गई है। उन्होंने बताया कि सभी विधायकों को इसमें शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया है। जदयू नेता श्रवण कुमार ने जानकारी दी कि विधायक दल की बैठक सुबह 11 बजे निर्धारित की गई, जिसमें पार्टी पदाधिकारियों के चयन पर भी फैसला लिया जाएगा। इधर, बैठक से पहले जनता दल यूनाईटेड के प्रदेश कार्यालय के बाहर लगे पोस्टर ने सियासी पारा और चढ़ा दिया है। बैनर-पोस्टरों में नेक्स्ट सीएम ऑफ बिहार लिखा गया है। एक पोस्टर में लिखा है, नीतीश नहीं तो निशांत चाहिए। जदयू नेताओं ने इन पोस्टरों के जरिए निशांत कुमार को बिहार का अगला मुख्यमंत्री बनाने की मांग कर रहे हैं।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। **विधि सलाहकार**: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website:** www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी **4 पीएम** न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक **संजय शर्मा**
द्वारा **आस्था प्रिंटर्स**, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। **संपादक- संजय शर्मा**